

# में स्तुति , सत्र 3

## विलाप-स्तुति

© 2024 टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. टेड हिल्डेब्रांट साल्टर की दूसरी पुस्तक में ईश्वर की स्तुति पर अपने उपदेश में हैं। यह स्तुति के आधार के रूप में विलाप और निन्दा पर सत्र क्रमांक तीन है।

स्तोत्र की दूसरी पुस्तक में भगवान की स्तुति की हमारी तीसरी प्रस्तुति में आपका स्वागत है।

आज, हम मूलतः तीन चीज़ों पर चर्चा करने जा रहे हैं। ये तीन प्रमुख विचार हैं जो प्रशंसा के संबंध में दूसरी पुस्तक से निकले हैं। सबसे पहले, हम भजन संहिता की पुस्तक की कर्मकांडीय पृष्ठभूमि के बारे में बात करने जा रहे हैं।

भजन मंदिर पर केंद्रित है और यह अनुष्ठान उन लोगों के लिए और आज हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण था। तो, हम प्रशंसा के संदर्भ में पुस्तक दो की अनुष्ठानिक पृष्ठभूमि के बारे में बात करेंगे। फिर हम दो विषयों पर जाएंगे जो बहुत कठिन हैं।

एक विलाप है। मैं प्रशंसा के आधार के रूप में विलाप को स्थापित करने का प्रयास करने जा रहा हूँ। फिर दूसरी बात, हम प्रशंसा के आधार के रूप में निन्दा पर काम करने जा रहे हैं।

यहीं पर रबर सड़क से मिलती है। यह संबंध बनाना कठिन है। मूल रूप से जो हुआ वह यह है कि जब मैंने पुस्तक दो को बार-बार पढ़ा, तो मैं यह देखता रहा कि प्रशंसा की पृष्ठभूमि में कितनी बार गलतियाँ बजती थीं।

तो ये वे तीन चीज़ें होंगी जिनसे हम आज अपनी तीसरी प्रस्तुति में निपटने जा रहे हैं। हमसे जुड़ने के लिए तुम्हारा शुक्रिया। अब, पिछली बार हमने भजन संहिता की पुस्तक के तीन मुख्य पात्रों के बारे में बात की थी।

तो, हमारे पास राजा था, हमारे पास भजनहार था, और हमारे पास दुश्मन था। ये थे हमारे तीन मुख्य किरदार। तब हम ने देखा, कि शत्रु ने हानि पहुंचाने, और फाड़ डालने, और फंसाने, गड़हे खोदने की साज़िश रची, और उनका मुंह सिंहों, और सांपों, और जंगली पशुओं, और जंगली कुत्तों की नाईं निगल जाता है।

शत्रु प्रार्थनाकर्ता या भजनहार पर आक्रमण कर रहा है। भजनहार तब राजा से प्रार्थना करता है और वह विलाप करता है और चिल्लाता है। राजा याचना करता है, याचना करता है, बलिदान देता है, और फिर मूल रूप से राजा भजनकार को मुक्ति, मुक्ति, बचाव और सुरक्षा के साथ जवाब देता है।

हमने कहा कि किले, चट्टान और सुरक्षा जैसे रूपक थे। उस प्रकार की चीज़ें। तब अंततः राजा ही न्याय करता है।

अब राजा भी, और आज हम इसी पर ध्यान केंद्रित करेंगे। राजा, भजनहार को बचाता और बचाता है, साथ ही शत्रु से लड़ता है, हराता है, दंडित करता है और न्याय प्रदान करता है। यहीं पर दोषारोपण, निर्णय आएंगे।

हम आज उसे प्रशंसा के आधार के रूप में देखेंगे। तब भजनहार उसी के आधार पर परमेश्वर की स्तुति करेगा। तो, हमारे तीन पात्र आज हमारी चर्चा में फिट बैठते हैं।

अब मैं स्तुति के इस कर्मकांडीय प्रसंग से शुरुआत करना चाहता हूँ। स्तोत्र की पुस्तक उस भाषा में लिखी गई है जिसे पुराने नियम के विद्वान सांस्कृतिक पृष्ठभूमि कहते हैं, जिसका मूल अर्थ अनुष्ठान है। मंदिर भजनों की अभिव्यक्ति का केंद्र या स्थान है।

जहाँ आपको कहावतों की तरह कुछ मिलता है, उसके दरबार में राजा अपने ऋषियों के साथ केंद्र होता है। आपके पास ऐतिहासिक किताबें हैं और वे राजाओं के इतिहास और मूसा की पृष्ठभूमि और उस तरह की चीज़ों में जाती हैं। लेकिन स्तोत्र के साथ, मंदिर वास्तव में फोकस और अनुष्ठान है जो उस तरह के वातावरण में चलते हैं।

तो, आज हम क्या देखने जा रहे हैं, और मैं सिर्फ पुस्तक दो को देखना चाहता हूँ और हम इनमें से कुछ चीज़ों के बारे में जानेंगे कि कैसे अनुष्ठान स्तोत्र की पुस्तक दो के पाठ में अपना रास्ता बनाता है। तो, मैं बस इसके कुछ अंश पढ़ूंगा। उदाहरण के लिए, स्तोत्र अध्याय 42 और 43 श्लोक 42, 3, और 4 में शुरुआती जोड़ी कहती है, मेरे आँसू दिन-रात मेरा भोजन बन गए हैं और लोग दिन भर मेरे बारे में कहते हैं, तुम्हारा भगवान कहाँ है? और इसलिए, उस पर ताना मारा जा रहा है और जिस तरह से दुश्मन उस पर ताना मारता है, आपका भगवान कहाँ है? और यही वह ताना है जो स्तोत्र की दूसरी पुस्तक में तरंगित होता है।

ये बातें मुझे याद आती हैं जब मैं अपनी आत्मा उँडेलता हूँ, कि कैसे मैं भीड़ के साथ जुलूस को परमेश्वर के घर तक ले जाता था। तो क्या आप देखते हैं कि जुलूस, वह खुद को सांत्वना देता है। दुश्मन पूछता है तेरा खुदा कहाँ है? और वह कहता है कि मुझे याद है जब मैं भीड़ के साथ, जुलूस के साथ भगवान के घर, यानी मंदिर, उत्सव की भीड़ के बीच खुशी और धन्यवाद के नारे के साथ गया था।

फिर अध्याय 43 श्लोक 3 और 4 में कुछ छंदों के नीचे, आपको याद होगा कि अध्याय 42 और 43 एक भजन युग्म हैं, भजन 1 और 2 के समान, भजन 9 और 10, भजन 42 और 43 के समान। तो यह 43, 3 और है 4. यह कहता है, अपना प्रकाश और अपना सत्य आगे बढ़ाओ। उन्हें मेरा मार्गदर्शन करने दीजिये। वे मुझे तेरे पवित्र पर्वत अर्थात् सियोन पर्वत पर, जहाँ मन्दिर है, अर्थात् तेरे निवासस्थान पर पहुंचाएं।

तब मैं तेरी वेदी, अर्थात् परमेश्वर की वेदी, के चारों ओर चलूंगा। तब मैं परमेश्वर की वेदी के चारों ओर चलूंगा। तो, आप देखें तो यह मंदिर के सामने वेदी के साथ एक मंदिर का संदर्भ है।

और वह कहता है, तब मैं आपके आनन्द और प्रसन्नता के लिथे परमेश्वर की वेदी के पास जाऊंगा। हे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, मैं वीणा बजाकर तेरी स्तुति करूंगा। मैं तुम्हारी प्रशंसा करूंगा।

तो, वीणा के साथ स्तुति मंदिर, भगवान के पर्वत और यहाँ की वेदी के संदर्भ में अध्याय 42 और 43 से हो रही है जैसे कि पुस्तक दो खुलती है। अब, जब हम अगले वाले पर जाते हैं, तो अगला वाला संभवतः अभयारण्य की ओर जाने वाले इस जुलूस के बारे में पुस्तक दो में किसी भी अन्य की तुलना में अधिक विस्तार से बात करता है। ऐसे अन्य भजन होंगे जहाँ वे उन्हें आरोहण के भजन कहते हैं जहाँ लोग यरूशलेम तक जाते हैं।

लेकिन यहाँ अध्याय 68 में, मुझे कुछ छंद पढ़ने दीजिए जो इसके बारे में बात करते हैं, और फिर यह बारूक एलोहीम, धन्य भगवान के साथ समाप्त होता है। भजन 48 छंद 24 से 27 तक। यह कहता है, शुरू हो रहा है, हे भगवान, तेरा जुलूस सामने आ गया है, मेरे भगवान और राजा का जुलूस।

वहाँ ईश्वर और राजा के जुड़ाव पर ध्यान दें। ये प्रमुख पात्र हैं, और भजन संहिता की पुस्तक में भजन का एक प्रमुख रूपक हैं। भगवान राजा है।

तो, हे भगवान, मेरे भगवान और राजा का जुलूस पवित्र स्थान में। सबसे आगे गायक और उनके पीछे संगीतकार। तो, यह वास्तव में हमें बता रहा है कि यह जुलूस कैसे निकला।

सबसे आगे गायक हैं और उनके पीछे वाद्य यंत्रों के साथ संगीतकार हैं। उनके साथ दासियाँ डफ बजा रही हैं। बड़ी सभा में परमेश्वर की स्तुति करो।

और इसलिए, आप देखते हैं कि यह सब मंदिर में हो रहा है। जुलूस जा रहा है, गायक, संगीतकार, युवा लड़कियाँ डफ बजा रही हैं और वे भगवान की स्तुति करने के लिए मंडली में जा रहे हैं। इस्राएल की सभा में यहोवा की स्तुति करो।

बिन्यामीन का छोटा गोत्र उनका नेतृत्व कर रहा है। तो, यह जनजातियों के माध्यम से जाता है और यह दिखाता है कि जनजातियाँ इन गायकों, संगीतकारों और डफ वादकों का अनुसरण कैसे करती हैं। वे मंदिर तक जाते हैं और छोटा आदिवासी बेंजामिन उनका नेतृत्व कर रहा है।

फिर श्लोक 35 में, 68:35, हे भगवान, आप अपने पवित्रस्थान में, उस स्थान पर जहाँ यह घटित हुआ था, अद्भुत हैं। इस्राएल का परमेश्वर अपने लोगों को शक्ति और सामर्थ्य देता है। ईश्वर या बारूक एलोहिम की स्तुति करो।

ईश्वर की स्तुति हो। तो यह जुलूस है और इसमें विस्तार से वर्णन किया गया है कि गायकों और संगीतकारों के साथ-साथ जनजातियों का जुलूस अभयारण्य तक कैसे जाता है। अब अध्याय 51 और 51 संभवतः पुस्तक 2 का सबसे प्रसिद्ध भजन है।

51 मूल रूप से बतशेबा के साथ पाप के बाद डेविड का प्रायश्चित्त स्तोत्र है। और मैं कहता हूँ, हे प्रभु, मेरे अपराध और मेरे अधर्म को क्षमा कर, और हे परमेश्वर, मुझे शुद्ध मन दे। परन्तु अध्याय 51 श्लोक 15 से 19 तक में यज्ञ के सन्दर्भ में प्रशंसा है।

और यह प्रशंसा का गीत है। मुझे बस भजन 51 की ये पंक्तियाँ पढ़ने दीजिए। 15 से 19 तक, हे प्रभु, मेरे होंठ खोल दे और मेरा मुँह तेरी स्तुति का वर्णन करेगा।

आप बलिदान से प्रसन्न नहीं होते। वे वेदी, मंदिर, मंडली के संदर्भ में ऊपर जा रहे हैं। वे गायन में अग्रणी हैं।

वह कहता है, परन्तु तुम बलिदान से प्रसन्न नहीं होते। तो, यह सिर्फ एक अनुष्ठानिक बात नहीं है। अनुष्ठान का अपने आप में कोई मतलब नहीं है।

परन्तु वह कहता है, तुम बलिदान से प्रसन्न नहीं होते, नहीं तो मैं ले आता। तुम होमबलि से प्रसन्न नहीं होते। फिर, संदर्भ वह वेदी है जहाँ प्रायश्चित्त भजन 51 का यह भजन गाया जाएगा।

हे परमेश्वर, तू तुच्छ न जानेगा। अपनी खुशी में सिव्योन को समृद्ध बनाओ। फिर, यरूशलेम का रूपांकन यहां बहुत बड़ा दिखाई दे रहा है।

यरूशलेम की दीवारों का निर्माण करो। अब यह डेविड के पश्चातापपूर्ण भजन, भजन 51 में है। और हम देखते हैं कि भजन 46 से 48 वास्तव में भगवान के शहर, भगवान के पर्वत और मंदिर पर केंद्रित थे।

और यहाँ हम देखते हैं कि 51 में यह यरूशलेम के उस तनाव को उठाता है। यरूशलेम की दीवारों का निर्माण करो। तब धर्मयुक्त बलिदान होंगे।

जाहिरा तौर पर, बलिदान उन लोगों के चरित्र पर निर्भर करते हैं जो आपको प्रसन्न करने के लिए धार्मिक बलिदान, संपूर्ण होमबलि चढ़ाते हैं। तब तुम्हारी वेदी पर बैल चढ़ाए जाएंगे। अब, वैसे, भजन 51 और भजन 50 के बीच बहुत दिलचस्प संबंध है।

भजन 50 में, भगवान कहते हैं, मूल रूप से, अरे, मुझे आपके बलिदान नहीं चाहिए। मुझे इसकी आवश्यकता नहीं है, क्या तुम्हें लगता है कि मैं तुम्हारा बलिदान खाता हूँ? क्या मुझे आपके भोजन की आवश्यकता थी? वह कहता है कि मुझे तुम्हारे भोजन की आवश्यकता नहीं है। मेरे पास एक हजार पहाड़ियों पर एक मवेशी है।

क्या मुझे वह गाना याद है? मेरे पास हज़ारों पहाड़ियों पर मवेशी हैं, यहां तक कि मैं कीटों पर भी नज़र रखता हूँ। मुझे आपके भोजन की आवश्यकता नहीं है। और यह दिलचस्प है।

तो, भजन 50, आपको ऐसा लगता है जैसे भगवान कह रहे हों, अरे, यह मत सोचो कि तुम मुझे अपने बलिदानों से खिलाकर कोई बड़ा उपकार कर रहे हो। मुझे इसकी जरूरत नहीं है।

हालाँकि, भजन 51 में डेविड फिर इस प्रायश्चित्त भजन को जारी रखता है और धार्मिक बलिदान की बात कहता है।

परमेश्वर के धार्मिक बलिदान क्या हैं? टूटे हुए और पसे हुए हृदय का तुम तिरस्कार न करोगे। और इसलिए यह वह हिस्सा है जिसमें भगवान की रुचि है। डेविड इसे भजन 51 में लाता है।

अब अंतिम बात अनुष्ठानिक संदर्भ या सांस्कृतिक संदर्भ पर। यह अध्याय 66 श्लोक 13 से 20 तक आता है, मंदिर, बलिदान और प्रार्थना के संदर्भ में प्रशंसा। और फिर, यह बारूक एलोहिम की तरह की टिप्पणी है जो 66, 13 से 20 में की गई है।

यह कहता है कि मैं होमबलि लेकर तेरे मन्दिर में आऊंगा और अपनी मन्नत पूरी करूंगा। अब आप देखते हैं कि प्रतिज्ञा करना भी एक सांस्कृतिक प्रकार की अनुष्ठानिक चीज़ है, प्रतिज्ञा करना। और अब वह आपसे अपनी मन्नत पूरी करने के लिए मंदिर में आता है।

जब मैं संकट में था, तब मेरे होठों ने प्रतिज्ञा की, और मेरे मुँह से बातें हुईं। हम बाद में देखेंगे; हम इसे प्रशंसा का व्रत कहने जा रहे हैं। दूसरे शब्दों में, भजनहार संकट में है।

वह परमेश्वर, अपने राजा को पुकारता है, और कहता है, हे परमेश्वर मुझे बचा। और मूलतः वह प्रतिज्ञा करता है कि यदि तुम मुझे बचाओगे तो मैं तुम्हारी स्तुति करूंगा। और इसलिए, आपके यहाँ स्तुति करने का व्रत है।

जब मैं संकट में था, तब मेरे होठों ने प्रतिज्ञा की, और मेरे मुँह से बातें हुईं। मैं तेरे लिये मोटे जानवर और मेढ़ों की बलि चढ़ाऊंगा। मैं बैल और बकरे चढ़ाऊंगा।

और आप यहाँ सभी प्रकार की बलिदानात्मक भाषा देखते हैं। सेला, ध्यानपूर्ण विराम। आओ और सुनो, तुम सब जो यहोवा से डरते हो, मैं तुम्हें बताता हूँ कि उसने मेरे लिए क्या किया है।

अब वह अपनी मन्नत पूरी कर रहे हैं, दूसरों को बता रहे हैं कि जब वह मुसीबत में थे तो उन्होंने मन्नत मानी थी और अब वह उसे पूरा कर रहे हैं। मैंने अपने मुँह से उसे पुकारा। उसकी तारीफ मेरी जुबान पर थी।

यदि मैं अपने हृदय में पाप रखता, तो यहोवा न सुनता। तो यहाँ आप देख सकते हैं कि ईश्वर द्वारा उसकी प्रार्थना सुनने के लिए एक चारित्रिक या गुणात्मक शर्त है। लेकिन भगवान ने प्रार्थना में मेरी आवाज जरूर सुनी और सुनी है।

परमेश्वर की स्तुति करो, बारूक एलोहीम, जिसने मेरी प्रार्थना को अस्वीकार नहीं किया या मुझसे अपना प्रेम नहीं छिपाया। और इसलिए फिर से, बहुत हद तक एक संदर्भ में, एक अनुष्ठानिक प्रकार का संदर्भ, जो बलिदानों, भगवान की स्तुति, उनके अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए आने पर केंद्रित है। कुछ-कुछ वैसा ही जैसा पॉल ने तब किया था जब उसने अधिनियमों की पुस्तक में नाज़रीन की शपथ ली थी और फिर यरूशलेम आया था।

नाज़रीन को अपना सिर मुंडवाना होगा और अपने बाल वेदी पर जलाना होगा। सावधान रहें, प्रतिज्ञा पूरी हो गई, जैसा कि हम संख्याओं में भी संख्या 5 और 6 में नाज़री प्रतिज्ञा के साथ देखते हैं। ठीक है।

अब हम बदलाव कर रहे हैं और यह बहुत बड़ा होने जा रहा है। प्रशंसा के आधार के रूप में विलाप। तो, यह हमारे प्रमुख विषयों में से एक होगा, प्रशंसा के आधार के रूप में विलाप करेंगे, और फिर हम प्रशंसा के आधार के रूप में निंदा करेंगे।

अब, सबसे पहले, आइए हरमन गंकल नाम के एक व्यक्ति से शुरुआत करें, जिसने मूल रूप से भजनों को शानदार ढंग से और बड़े विस्तार से तोड़ दिया, जिन्हें अलग-अलग शैलियाँ कहा जाता है। शैलियों में से एक को विलाप के भजन कहा जाता था। अन्य लोगों को विलाप शब्द पसंद नहीं है, जो उनके लिए दुर्भाग्यपूर्ण है, मुझे लगता है, और वे उन्हें याचिका का स्तोत्र कहते हैं।

और इसलिए, वहां एक प्रकार की शब्दावली संबंधी चर्चा चल रही है। अब व्यक्ति के विलाप के भजन हैं। भजन 42 और 43, यह शुरुआती जोड़ी, वह व्यक्तिगत विलाप था।

भजन 51, भजन 54 से 57, 59, 61, 64, 69 से 71 तक। तो, आप देखते हैं कि पुस्तक दो में बहुत सारे भजन हैं जो विलाप के व्यक्तिगत भजन हैं। समुदाय तब शोक मनाता है जब वह व्यक्ति से अलग हो जाता है, जो एक मैं, मैं, मेरी तरह की चीज़, व्यक्तिगत, एकवचन है।

समुदाय हम, हमारा, हम जैसी चीज़ों पर स्विच करता है। और भजन 44 और भजन 60 में, आपके पास एक सामुदायिक विलाप है जिसे आमतौर पर बहुवचन, हम, हम और हमारे सर्वनामों द्वारा पहचाना जाता है। और फिर अंततः आपके पास भजन हैं।

आपके पास 47 में भजन हैं और फिर विशेष रूप से 65 से 68 स्तोत्र की दूसरी पुस्तक में महान भजन हैं। भजन सीधे तौर पर ईश्वर की स्तुति है। इसलिए जब कोई आम तौर पर पुस्तक दो में भगवान की स्तुति का अध्ययन करता है, तो आप सीधे 65 से 66, 67, और 68 की ओर दौड़ेंगे और प्रशंसा के उन भजनों को प्राप्त करेंगे।

हालाँकि, जैसे-जैसे मैं स्तोत्र की पुस्तक 2 को बार-बार पढ़ता रहा, मुझे बहुत सारी प्रशंसा दिखाई देने लगी, हाँ, यह भजनों में है, लेकिन विलाप के इन स्तोत्रों में बहुत अधिक प्रशंसा थी। और इसलिए, मुझे विलाप के इन भजनों के बीच एक संबंध दिखाई देने लगा। मैं आगे जो करना चाहता हूँ वह यह है कि यह विलाप का एक क्लासिक स्तोत्र है।

मुझे एहसास हुआ कि यह पुस्तक एक, पुस्तक एक, और स्तोत्र की पुस्तक दो में है, अध्याय एक से 41 तक पुस्तक एक है। और अधिकांश विलाप उस पहली पुस्तक में पाए जाते हैं। इसके अलावा, पुस्तक दो में, जैसा कि हमने पहले दिखाया, इन विलाप भजनों की एक टन संख्या है।

अब होता यह है कि जैसे ही आप पहली किताब से आगे बढ़ते हैं और कई तरीकों से दो विलाप बुक करते हैं, जब आप स्तोत्र के अंत में पांचवीं किताब पर पहुंचते हैं, तो आप पाएंगे कि वहीं

प्रशंसा है। भजन 145 से 150 तक परमेश्वर की स्तुति करो, बार-बार परमेश्वर की स्तुति करो, हलैलूजाह जैसी बात। प्रभु की स्तुति।

अब दिलचस्प बात यह है कि पुस्तक दो में भी, यह विलाप से शुरू होता है और फिर पुस्तक दो के अंत में प्रशंसा तक जाता है। तो ऐसा लगता है कि यह विलाप आंदोलन की प्रशंसा के लिए है। विलाप, पहले के भजन और अंत 65 से 68, स्तुति के भजन।

तो, मैं जो करना चाहता हूं वह बस एक क्लासिक पढ़ना है। यह विलाप का एक संक्षिप्त क्लासिक स्तोत्र है और आपको यह बदलाव दिखाता है। यह वह बड़ा मुद्दा है जिसे मैं समझाने की कोशिश कर रहा हूं कि विलाप भजनों में एक बदलाव होता है।

यह बदलाव मूल रूप से विलाप से लेकर अचानक भजन में आता है, जाहिरा तौर पर बिना किसी कारण के, लेकिन एक कारण है। मैं सोचता हूं कि भगवान ने उस व्यक्ति को बचाया। प्रशंसा में बदलाव आ गया है।

इसलिए, इनमें से कई शोक भजनों में विलाप से प्रशंसा की ओर बदलाव आया है। तो, भजन 13, एक क्लासिक है, वैसे, हमारे यहां एक छात्र वेस रॉबर्ट्स हैं, जिन्होंने भजन 13 का शानदार दृश्य प्रस्तुत किया है। यह यूट्यूब पर उपलब्ध है।

यदि आप रुचि रखते हैं, तो वेस रॉबर्ट्स द्वारा भजन 13 का चित्रण। यह बहुत अच्छा है। शास्त्रीय विलाप।

यहां बताया गया है कि इसकी शुरुआत कैसे होती है। अब मैं हमेशा लोगों से कहता हूं, क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि आप चर्च में हैं और आपके चर्च का बुजुर्ग खड़ा है और वह भगवान से भजन प्रार्थना करने जा रहा है। वह आपके चर्च में खड़ा होता है, बुजुर्ग, और वह इस तरह से अपनी प्रार्थना शुरू करता है।

आखिरकार, उनमें से कई भजन प्रार्थनाएँ हैं। हे प्रभु, तुम मुझे सदैव के लिये कब तक भूलोगे? और आप चर्च में चल रही शांति को सुन सकते हैं। हे प्रभु, तुम मुझे सदैव के लिये कब तक भूलोगे? तुम कब तक मुझसे अपना मुँह छिपाओगे? और आप लोगों को हाथ उठाते हुए देख सकते हैं।

भगवान तुम्हें नहीं भूले हैं। भगवान सब कुछ जानता है। भगवान आपको याद करते हैं।

और आप लोगों को उसके विलाप को तोड़ने के लिए कूदते हुए देख सकते हैं क्योंकि हम विलाप नहीं ले सकते। परन्तु वह कहता है, तू कब तक अपना मुख मुझ से छिपाती रहेगी? मुझे कब तक अपने विचारों से जूझना पड़ेगा और हर दिन मेरे दिल में दुःख रहेगा? मेरा शत्रु मुझ पर कब तक विजय पाएगा? तो, आप देखते हैं कि भजनहार पर दुश्मन द्वारा फिर से हमला किया जा रहा है। शत्रु मुझ पर कब तक विजय पाएगा? यही विलाप है।

वह भगवान से पूछ रहा है, कब तक, कब तक? मेरी ओर देख और मुझे उत्तर दे, हे मेरे परमेश्वर, मेरी आंखों को ज्योति दे, नहीं तो मैं मृत्यु की नींद सो जाऊंगा। मेरा शत्रु कहेगा, मैं ने उस पर विजय पा ली है, और जब मैं गिरूंगा, तब मेरे शत्रु आनन्द करेंगे। बूम, शिफ्ट होता है।

यहाँ ऐसा होता है। लेकिन मुझे आपके अटल प्यार पर भरोसा है। मेरा हृदय तेरे उद्धार से आनन्दित है।

मैं यहोवा का भजन गाऊंगा क्योंकि उसने मेरे प्रति भलाई की है। और इस प्रकार, भजन समाप्त होता है। एक ब्रेक है।

वह विलाप करता है। वह ईश्वर के प्रति ईमानदार होने से नहीं डरता। हे प्रभु, तुम मुझे कब तक भूलोगे? और वह ऐसा ही महसूस करता है।

और फिर अचानक, तेजी से, वह भजन 13 के अंत में इस प्रशंसा पर स्विच करता है। यह बहुत सारे विलापों की विशेषता है। अब मुझे कहना होगा, सभी विलाप ऐसे ही समाप्त नहीं होते।

हम हमेशा प्रशंसा के इस सुखद नोट पर समाप्त करना पसंद करते हैं। कुछ भजन, और इसीलिए मुझे ये भजन पसंद हैं, इतने यथार्थवादी हैं कि यह नीचे आते हैं और आदमी विलाप कर रहा है, विलाप कर रहा है। अंधेरा होता जा रहा है।

और अचानक वह समाप्त हो जाता है और वह भजन को एक तरह से समाप्त कर देता है। वह हवा के लिए ऊपर नहीं आता। तो, भजन 88 उस पर एक क्लासिक है।

तो सावधान हो जाइये। हर कोई कहता है, ठीक है, शोकगीत भजन हमेशा प्रशंसा पर समाप्त होते हैं। यह हमेशा सच नहीं होता।

और वैसे, यह अक्सर जीवन के साथ भी सच होता है। जबकि जीवन में मोड़ आ सकता है और प्रशंसा में बदलाव हो सकता है, कभी-कभी यह नीचे चला जाता है और यही भजन की सुंदरता है। वे जीवन को वैसा ही चित्रित करते हैं जैसा वह वास्तव में है।

भजन 88 प्रसारित करने के लिए नहीं आता है। हे प्रभु, भजन 88, क्या तू मुझे अस्वीकार करता है और अपना मुख मुझ से छिपाता है? मैं अपनी युवावस्था से ही पीड़ित रहा हूँ और मृत्यु के निकट हूँ। मैंने आपके आँसू झेले हैं और निराशा में हूँ।

तेरा क्रोध मुझ पर भड़क उठा है। तुम्हारे आतंक ने मुझे नष्ट कर दिया है। दिन भर वे बाढ़ की भाँति मुझे घेरे रहते हैं।

उन्होंने मुझे पूरी तरह से घेर लिया है। तू ने मेरे साथियों और प्रियजनों को मुझ से छीन लिया है। अंधेरा मेरा सबसे करीबी दोस्त है।

अवधि। चर्चा का अंत। अंधेरा मेरा सबसे करीबी दोस्त है।

हम कहते हैं, ठीक है, एक मिनट रुकिए, आपको प्रशंसा के लिए आगे आना होगा। नहीं, अँधेरा मेरा सबसे करीबी दोस्त है। अवधि।

इसका अंत. कुछ लोगों ने निराशावाद से बाहर निकलने की कोशिश की है, और मैं भजन 88 के इस निराशावाद को भजन 89 में बाँधने की कोशिश से सहमत नहीं हूँ। लेकिन मुझे लगता है कि यह भजन 88 की अखंडता का उल्लंघन करता है।

और वैसे, भजन 88 और 89 एक जोड़ी नहीं हैं। आपके पास भजन युग्म हैं, अध्याय एक और दो में स्पष्ट युग्म एक स्पष्ट युग्म हैं। अध्याय 42 और 43, जैसा कि हमने बार-बार दोहराए गए खंडन के साथ दिखाया है, एक स्पष्ट जोड़ी है।

भजन 9 और 10 एक स्पष्ट जोड़ी है जहां एक एक्रोस्टिक है और यह एक्रोस्टिक अध्याय 9 से अध्याय 10 तक चलता है, जो उन्हें एक साथ जोड़ता है। भजन 89 और 88 ऐसी जोड़ी नहीं हैं। और इसलिए, मुझे लगता है कि आपके पास यहां जो कुछ है वह मार्क की किताब के अंत में आपके पास जो है, मार्क 16 श्लोक 8 के अंत में है। मार्क 16:8 के अंत में यह यीशु के पुनरुत्थान और के साथ समाप्त होता है। औरतें आती हैं और किसलिए डरती और कांपती हैं।

और यह वहीं खत्म हो जाता है. और इसीलिए, मुझे लगता है, भिक्षुओं ने कहा कि यह सुसमाचार का बहुत बुरा अंत है। आपका अंत यीशु के मृतकों में से जी उठने के साथ होना है।

यह सकारात्मक होना चाहिए. और इसलिए, अचानक आपको मार्क की पुस्तक का लंबा अंत मिलता है। लेकिन मुझे लगता है कि मार्क की पुस्तक का संक्षिप्त अंत, और आप एनआईवी में देखेंगे और अन्य लोग इसे चिह्नित करेंगे, मूल रूप से, महिलाएं डर और कांप रही हैं, और फिर तेजी से, सुसमाचार समाप्त हो जाता है।

और मुझे लगता है कि यह मार्मिक है. यह आपको चीजों के बारे में सोचने पर मजबूर करता है। यह आपको जीवन और चीजों के बारे में सोचने पर मजबूर करता है और ये महिलाएं कैसे डरी हुई थीं।

मुझे लगता है कि आपको पूछना होगा, मार्क की किताब के माध्यम से डर और कांपने की उस धारणा को वापस लेना होगा, और वहां कुछ बहुत ही दिलचस्प चीजें देखने को मिलेंगी। तो, ये विलाप हैं और हमने विलाप के बारे में कुछ बात की है। अब आइए ध्यान केंद्रित करें, वैसे, मुझे यह भी कहना चाहिए, मैं उस महान विलाप को भूल गया कि इस कमरे में या इसे सुनने वाले हर व्यक्ति को पता होगा कि यह भजन 22 है।

यह जाता है, डेविड, वैसे, यह डेविड का एक भजन है। अब जब मैं यह कहता हूँ, तो आप डेविड के बारे में नहीं सोचेंगे, आप किसी और के बारे में सोचेंगे। मैं चाहता हूँ कि आप डेविड के बारे में सोचें।

हे भगवान, हे भगवान, आपने मुझे क्यों छोड़ दिया? तुम मेरी कराहों से इतनी दूर क्यों हो? और वह आगे बढ़ता जाता है, भजन 22। जैसे ही मैं कहता हूँ, हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया? आप कहते हैं, अच्छा, वह किसके मुँह पर है? वह डेविड है जो यीशु से एक हजार साल पहले लिख रहा था। जब यीशु क्रूस पर थे तब उन्होंने उस भजन को अपने होठों पर लिया था।

तो यह विलाप का महत्व है, कोई मामूली बात नहीं। यीशु अपने जीवन के सबसे महत्वपूर्ण समय में से एक में विलाप को उठाते हैं और विलाप को अपने पिता के साथ अपने रिश्ते को व्यक्त करने की अनुमति देते हैं। हे भगवान, हे भगवान, आपने मुझे क्यों छोड़ दिया? अब आइए आगे बढ़ें और विलाप और प्रशंसा के बीच इस संबंध को स्थापित करें।

मैं अब दूसरी पुस्तक पर जा रहा हूँ क्योंकि यहां हमारा ध्यान इसी पर केंद्रित है। मैं बस यह कहना चाहता हूँ, मुझे लगता है कि चर्च में विलाप को कम महत्व दिया गया है। हम एक चर्च के संदर्भ में हैं जहां हर कोई यह सोचना पसंद करता है कि यदि आप यीशु का अनुसरण करते हैं और अपना जीवन सही ढंग से जीते हैं, तो आपके जीवन में सब कुछ अच्छा होगा।

विलाप के भजन, क्रूस पर यीशु, हमें बताते हैं कि यह हमेशा सच नहीं होता है। तो, समृद्धि का सुसमाचार एक मृत्यु है। मुझे लगता है कि हमारी संस्कृति के साथ क्या हो रहा है, हम यीशु के बहुत कठोर बयानों के बजाय समृद्धि की धारणा को पसंद करते हैं, इसे सब त्याग दें।

यदि आप मेरे अनुयायी बनना चाहते हैं, तो ये बहुत कठिन कथन हैं। विलाप यीशु के मुँह से भी निकलता है। हमारी संस्कृति में उन्हें कम महत्व दिया जाता है क्योंकि हमें खुशी पसंद है।

यह कुछ-कुछ नीतिवचनों और अन्य संस्कृतियों और यहाँ तक कि बाइबल की तरह है। मूल रूप से, यदि आप एक खुशहाल व्यक्ति हैं और आपके पास बहुत सारी संपत्ति है, तो आपके हजारों दोस्त हैं, लेकिन यदि आप गरीब और दुखी हैं, तो जो व्यक्ति रोता है, वह अकेला रोता है। जो व्यक्ति आनंदित होता है उसके सौ मित्र होते हैं।

और मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि, मुझे लगता है कि हमें इसकी आवश्यकता है, यीशु कहते हैं, तुम रोओ। मेरा मानना है कि यह पॉल ही है जो रोने वालों के साथ रोता है और आप उन लोगों के साथ आनन्द मनाते हैं जो आनन्दित होते हैं। ठीक है, यहाँ सुसमाचार पर आते हैं।

मुझे यहां इस आखिरी स्लाइड के नीचे से बस एक चीज़ लेने दीजिए। मैं यह कहना चाहता हूँ, प्रशंसा के आधार के रूप में विलाप का महत्व। मैं यह कहना चाहता हूँ कि विलाप राजा की मुक्ति के लिए पुकार से उत्पन्न होने वाली प्रशंसा के समृद्ध रंगों को प्रदर्शित करता है।

इसलिए स्क्रीन पर भी, जैसा कि जब आपकी पृष्ठभूमि गहरे रंग की होती है तो हमें स्क्रीन के साथ संघर्ष करना पड़ता है, सफेद रंग बेहतर दिखता है। यदि आपकी पृष्ठभूमि भूरे रंग की है, तो अक्षर बाहर नहीं उछलेंगे। तो, विलाप हमें वह अंधकारमय पृष्ठभूमि देगा जिससे प्रशंसा सामने आएगी।

इसलिए, मुझे लगता है कि विलाप के समृद्ध रंग भजनों की पृष्ठभूमि की भूमिका निभाते हैं। इसलिए, हम इसे जोड़ना चाहते हैं और मूल रूप से यहां भी मुद्दा यह है कि मैं जो सुझाव देना चाहता हूँ वह यह है कि प्रशंसा मूल रूप से वास्तविकता पर आधारित है। दूसरे शब्दों में, यह केवल परमेश्वर की स्तुति करना नहीं है।

हम ईश्वर की स्तुति उसके लिए करते हैं जो आप हैं, न कि उसके लिए जो आपने किया है। भजनकार कहता है, नहीं, तू ने जो किया है उसके लिये मैं तेरी स्तुति करता हूँ। और इसलिए, प्रशंसा वास्तविकता में टिकी हुई है।

तो यह जीवन में उतार-चढ़ाव है और इससे सब कुछ खुश नहीं हो जाता। प्रशंसा का आधार विलाप है। पाँच उदाहरण और मैं केवल पाँच उदाहरणों पर काम करना चाहता हूँ।

यहां और भी बहुत कुछ हैं, लेकिन मुझे केवल इन पांच पर काम करने दीजिए। सबसे पहले, अध्याय 42 और 43, आप देखते हैं कि मैं इन अध्यायों पर वापस आता रहता हूँ। अध्याय 42 श्लोक तीन यह कहता है, मेरे आंसू दिन रात मेरा आहार बने रहते हैं, और मनुष्य दिन भर मुझ से कहते रहते हैं, बोली, तेरा परमेश्वर कहां है? अध्याय 42 श्लोक 10, मेरी हड्डियाँ प्राणघातक पीड़ा सहती हैं, क्योंकि मेरे शत्रु दिन भर मुझ से कहते रहते हैं, बोली, तेरा परमेश्वर कहाँ है? एक ही प्रश्न, एक ही प्रश्न भजन युगम में दो बार दोहराया गया।

फिर स्तोत्र का पाठ फूट पड़ता है। वह कहता है, तुम मेरे प्राण को उदास क्यों कर रहे हो? हे मेरे प्राण, तू उदास क्यों है? तुम मेरे भीतर इतने व्याकुल क्यों हो? और फिर वह ब्रेक ले लेता है। बदलाव होता है।

अपनी आशा भगवान पर रखो. मैं फिर भी उसकी प्रशंसा करूँगा. वह इस निराश आत्मा से कैसे बाहर निकलता है? जब वह सोचता है, तो वह टूट जाता है, मैं अभी भी उसकी स्तुति करूँगा, मेरे उद्धारकर्ता, जो मुझे मुक्ति देने वाला है, मेरे उद्धारकर्ता और मेरे भगवान।

अब यह एक मामला है तो आपके पास यह कहां है, आपका भगवान कहां है? और तब मेरी आत्मा उदास हो जाती है और फिर उफान पर आ जाती है, वह उसमें से टूट जाता है। अध्याय 57 में, हमारा दूसरा है, यह हमारा दूसरा है। हम शायद इसे थोड़ा सा देखने के लिए ही यहां उछलते हैं।

और मूल रूप से, यह भजन 57 है, एक और भजन जिसके बारे में हम इस विलाप को सामने लाएंगे और इस बदलाव को यहां देखेंगे। अब मुझे भजन 57 से इन छंदों को पढ़ने दीजिए। श्लोक दो, मैं सर्वोच्च ईश्वर को पुकारता हूँ, ईश्वर को जो मेरे लिए अपना उद्देश्य पूरा करता है।

वह स्वर्ग से भेजता है और उन लोगों को डाँटकर मुझे बचाता है जो मेरे पीछे पड़े हैं। तो आप इस हॉट खोज को देखें। आप देखते हैं कि शत्रु उसके पीछे आ रहे हैं।

भगवान अपना प्यार और अपनी वफादारी भेजते हैं। उन्होंने कहा, मैं शेरों के बीच में हूँ। अब याद करें कि कैसे शेर दुश्मन के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले रूपकों में से एक था।

मैं हिंसक पशुओं के बीच में पड़ा हूँ, उन मनुष्यों के बीच जिनके दांत भाले और तीर हैं, जिनकी जीभ तलवारों की तरह तेज हैं। तो, विनाश और हानि के साधन. उन्होंने मेरे पैरों के लिये जाल फैलाया।

मैं संकट में झुक गया। उन्होंने मेरे मार्ग में गड़हा खोदा, परन्तु वे आप ही उसमें गिर पड़े। इसलिये वे उनके लिये फंदा बनाकर गड़हा खोदते हैं, और वे आप ही उसमें गिर पड़ते हैं।

अब श्लोक नौ में और उसके बाद आप इस प्रकार का परिवर्तन घटित होता हुआ पाएंगे। तो मूल रूप से, वह कहता है, आपके पास ये हिंसक जानवर मेरे पीछे आ रहे हैं। उनकी जीभ और बातें तलवार की तरह तेज़ हैं और वे सचमुच मेरा पीछा कर रहे हैं।

और फिर अचानक श्लोक नौ, अध्याय 57, श्लोक नौ में, आपको यह बदलाव घटित होता हुआ दिखाई देता है। वह कहता है, हे यहोवा, मैं जाति जाति के बीच में तेरी स्तुति करूंगा। मैं देश देश के लोगों के बीच में तेरे विषय में गाऊंगा क्योंकि तेरा प्रेम स्वर्ग तक पहुंच रहा है।

आपकी वफ़ादारी आसमान तक पहुँचती है. हे परमेश्वर, स्वर्ग से ऊपर महान बनो। तेरी महिमा सारी पृथ्वी पर फैले।

भजन 57 छंद 9 से 11 के इस पहलू को मैट हॉफ़लैंड नाम के एक व्यक्ति ने भजन में चित्रित किया था। यह यूट्यूब पर है. हमारे अंदर आने से पहले मैंने बस इसे देखा।

इसे कहते हैं ग्रेट इज़ योर लव. यदि आप इसे खोजना चाहते हैं, तो मैट हॉफ़लैंड द्वारा ग्रेट इज़ योर लव। यह यूट्यूब पर है.

मैट मेरे पूर्व छात्रों में से एक था। वह विस्कॉन्सिन में कैंप फॉरेस्ट स्प्रिंग्स में काम करता है। वह एक जबरदस्त संगीतकार और एक खूबसूरत गाना है।

वह इसी अंश के आधार पर गाते हैं। हे परमेश्वर, स्वर्ग से ऊपर महान बनो। तेरी महिमा सारी पृथ्वी पर सर्वोपरि रहे।

वह कहां से आया? यह भजनकार को निगलने के लिए तैयार इन हिंसक जानवरों से आया था। फिर वह मुड़ता है और प्रशंसा की ओर यह बदलाव होता है। फिर वह परमेश्वर की इस महान स्तुति पर चला जाता है।

हे यहोवा, मैं राष्ट्रों के बीच तेरी स्तुति करूंगा। फिर से, उस जेरूसलम संदर्भ से बाहर निकलते हुए। याद रखें हमारे पास यरूशलेम अध्याय 46 से 48, 51, आदि थे।

और अब अचानक तुम इसे यरूशलेम से सभी राष्ट्रों में फैलते हुए देखते हो। तो, यह भजन 57 है, जो इस विलाप से एक बार फिर प्रशंसा की ओर सुंदर बदलाव है। अब हम अपने तीसरे भजन के लिए भजन 59 पर जा रहे हैं।

और यह कहता है कि भजन 59 विलाप से शुरू होता है। और कहता है, देखो, वे किस प्रकार झूठ बोलते हैं, और मेरी बाट जोहते हैं। हे प्रभु, मेरे बिना किसी अपराध या पाप के भयंकर लोग मेरे विरुद्ध षडयंत्र रचते हैं।

मैंने कोई गलती नहीं की है फिर भी वे मुझ पर हमला करने के लिए तैयार हैं। मेरी सहायता के लिए उठो. मेरी दुर्दशा देखो.

मैंने कोई गलती नहीं की है फिर भी वे मुझ पर हमला करने के लिए तैयार हैं। तो, उसे पता चल गया कि वे हमला करने के लिए तैयार हैं और वह भगवान को पुकारता है। वे शाम को कुत्तों की तरह गुर्रते हुए, गुर्रते हुए लौटते हैं, और शहर में घूमते हैं।

तो, आपके पास इस प्रकार का हिंसक जानवर जैसा रूपक है। क्या आपको याद है कि कुत्ते उनका पीछा कर रहे थे, इज़ेबेल का खून चाट रहे थे और उसे खा रहे थे और ऐसी चीजें जो एक बुरी चीज़ की तरह थी, वास्तव में बहुत बुरी चीज़ थी। देखिये ये अपने मुंह से क्या उगलते हैं।

वे अपने होठों से तलवारें निकालते हैं। फिर, होंठ और तलवारें आपस में जुड़ी हुई हैं, जो नुकसान वे अपने बोलने से कर रहे हैं। और वे कहते हैं, हमारी कौन सुन सकता है? उन्हें लगता है कि वे इससे बच जायेंगे।

इस बारे में कोई नहीं जानता. हमें कौन सुन सकता है? वे शाम को कुत्तों की तरह गुर्रते और शहर में घूमते हुए लौटते हैं। श्लोक 14.

और फिर क्या होता है? फिर, ये गुर्राने वाले कुत्ते उस पर हमला करते हैं और उसे खा जाने के लिए तैयार हो जाते हैं। और फिर अचानक श्लोक 19 या 16, 59, 16, बूम, आपको यह बदलाव मिलता है। और यह बदलाव यहाँ है, लेकिन मैं सुबह आपकी ताकत के बारे में गाऊंगा।

ध्यान दें कि वे रात में इधर-उधर घूम रहे हैं। भोर को वह तेरी शक्ति का गीत गाएगा। मैं तुम्हारे प्रेम का गीत गाऊंगा क्योंकि तुम मेरा गढ़ हो, संकट के समय में मेरा आश्रय हो।

फिर से, राजा का रूपक चट्टान के रूपक, किले के रूपक, गढ़ टॉवर जैसे मजबूत टॉवर जैसे रूपक में टूट जाता है। हे मेरी शक्ति, मैं तेरी स्तुति गाता हूँ। हे भगवान, हे भगवान, आप मेरे गढ़ हैं, मेरे प्यारे भगवान।

तो यह फिर से विलाप और प्रशंसा की ओर बदलाव के बीच संबंध के साथ है। अब कुछ और, वह नंबर तीन था। चौथा नंबर भजन 69 होने वाला है।

69 एक लम्बा स्तोत्र है, विलाप का स्तोत्र। और मूलतः, हम उसी विलाप को प्रशंसा का मार्ग प्रशस्त करते हुए देखेंगे। तो, भजन 69 इन्हें पढ़ते हुए, हे भगवान, मुझे बचा ले, क्योंकि पानी मेरी गर्दन तक आ गया है।

आप यिर्मयाह के बारे में सोच सकते हैं। याद रखें, यिर्मयाह को कई दिनों तक उस सेप्टिक टैंक में रखा गया था। वह लगभग वहीं मर गया।

और इसलिए, पानी की यह पुकार मेरी गर्दन तक आ रही है, मैं उस दलदल की गहराइयों में डूब जाता हूँ जहाँ कोई पैर रखने की जगह नहीं है। मैं गहरे पानी में आ गया हूँ और बाढ़ ने मुझे घेर लिया है। मैं मदद के लिए गुहार लगाते-लगाते थक गया हूँ।

मेरा गला सूख गया है। मेरी आँखें अपने ईश्वर को ढूँढने में असफल हो गई हैं। जो लोग बिना कारण मुझ से बैर रखते हैं, उनकी संख्या मेरे सिर के बालों से भी अधिक है।

बहुत से लोग अकारण मेरे शत्रु हैं। वे मुझे नष्ट करना चाहते हैं। जो मैंने नहीं चुराया, उसे वापस लौटाने के लिए मैं मजबूर हूँ।

और फिर वह श्लोक छह में आता है और कहता है, हे प्रभु, सर्वशक्तिमान प्रभु, जो लोग तुझ पर आशा रखते हैं वे मेरे कारण अपमानित न हों। हे इस्राएल के परमेश्वर, जो तेरे खोजी हैं वे मेरे कारण लज्जित न हों। क्योंकि मैं तिरस्कार सहता हूँ।

अब वह उस शोचनीय स्थिति का वर्णन करने के लिए वापस जाता है जिसमें वह है। मैं आपकी खातिर तिरस्कार सहता हूँ और शर्म से मेरा चेहरा ढक जाता है। फिर, यह शर्म और सम्मान की संस्कृति है।

यह बहुत बड़ी बात है। वह उस शर्मिंदगी को आत्मसात कर रहा है जो उस पर आ रही है। मैं अपने भाइयों के लिये पराया और अपनी माता के बेटों के लिये पराया हूँ।

शर्मिंदगी इतनी गहरी होती है कि उसके पारिवारिक रिश्ते तक टूट जाते हैं। क्योंकि तेरे घर का उत्साह मुझे भस्म कर देता है। किसी को परिचित लग रहा है? तुम्हारे घर का उत्साह मुझे खा जाता है।

मुझे आश्चर्य है कि वह किसके बारे में बात कर रहा था? डेविड. हाँ। यीशु, बाद में जब वह मंदिर को साफ करता है, तो तुम्हारे घर का उत्साह मुझे खा जाता है।

और जो तेरा अपमान करते हैं उनका अपमान मुझ पर पड़ता है। जब मैं रोता हूँ और उपवास करता हूँ, तो मुझे तिरस्कार सहना पड़ता है। जब मैं टाट या टाट का कपड़ा पहनता हूँ, तो लोग मेरा मज़ाक उड़ाते हैं।

जो फाटक पर बैठते हैं, जो सम्मान का स्थान है, जहाँ पुरनिये रहते हैं, वे जो फाटक पर बैठते हैं, वे मेरा उपहास करते हैं। मैं शराबियों का गीत हूँ। पद 19 तो तू जानता है, कि मैं कैसा तिरस्कृत, लज्जित, और लज्जित हूँ।

हे परमेश्वर, मेरे सभी शत्रु तेरे साम्हने हैं। तिरस्कार ने मेरा दिल तोड़ दिया है और मुझे असहाय बना दिया है। मैंने सहानुभूति की तलाश की, लेकिन कोई नहीं थी।

सांत्वना देने वाले, लेकिन मुझे कोई नहीं मिला। इसकी जांच करें। ठीक है।

मुझे उसे फिर से पढ़ने दो। यह खूबसूरत है। मैंने सहानुभूति की तलाश की, लेकिन कोई नहीं थी।

आराम देने वालों के लिए, लेकिन कोई नहीं मिला। उन्होंने मेरे भोजन में पित्त डाल दिया, और मेरी प्यास बुझाने के लिये मुझे सिरका दिया। जाना पहचाना? ईसा मसीह का क्रॉस.

उन्होंने मुझे पित्त दिया. उन्होंने मेरी प्यास बुझाने के लिये मुझे सिरका दिया। सांत्वना देने वाला कोई नहीं था.

शिष्य भाग गये थे। अब यह डेविड है. वे इन भजनों और यीशु के अवतार लेने वाले भजनों और इन विलापों के बारे में बात कर रहे थे।

इसलिए, यीशु ने विलाप को शब्दों में व्यक्त किया। उन्होंने विलाप को अवतरित किया। और वैसे, यदि हम यीशु के अनुयायी हैं, तो हमसे कहा जाता है कि हम क्या अपनाएँ? हमारी समृद्धि ले लो? नहीं - नहीं।

हमारा क्रूस उठाओ और उसका अनुसरण करो। यह एक विवरण है. यह डेविड के साथ हुआ, यह यीशु के साथ हुआ।

यह पवित्रशास्त्र के माध्यम से प्रतिध्वनित होता है। और वैसे, यदि हम मसीह के सच्चे अनुयायी हैं, तो यह हमारे जीवन में भी प्रतिध्वनित होगा। भजन 69, क्या वह वहीं है जहाँ वह चीज़ें छोड़ता है? नहीं, एक बदलाव है जो घटित होता है और यहां वह घटित होता है।

भजन 69 श्लोक 29 और 30, मैं दुःख और संकट में हूँ। हे भगवान, आपका उद्धार मेरी रक्षा करे। और फिर वह इसे बनाता है, उफान।

मैं गीत गाकर परमेश्वर के नाम की स्तुति करूंगा, और धन्यवाद देकर उसकी महिमा करूंगा। सुंदर। अंत में, वह वास्तव में सृजन का मानवीकरण करता है।

वह कहता है, स्वर्ग और पृथ्वी उसकी स्तुति करें। याद रखें यीशु ने कहा था, यदि तुम स्तुति नहीं करोगे, तो चट्टानें चिल्ला उठेंगी। और यहाँ भजनकार कहता है, स्वर्ग और पृथ्वी, और समुद्र और जितने जीव उनमें चलते हैं, उसकी स्तुति करो।

क्योंकि परमेश्वर सियोन को बचाएगा। और वहां हम फिर से सियोन के साथ जाते हैं। यह भजन 69 है जो अब सियोन में वापस आ रहा है।

क्योंकि परमेश्वर सियोन को बचाएगा और यहूदा के नगरों को फिर बसाएगा। तब लोग वहां बस जायेंगे और उस पर कब्जा कर लेंगे। तो वह भजन 69 है।

सुंदर। आप यीशु और क्रूस और अन्य चीजों के साथ इसके मसीहाई भावों को सुनते हैं। और फिर हमारा आखिरी भजन वास्तव में कुछ भजनों को भजन 66 में वापस ले जाना है।

और यह भजन 66 है। यही कारण है कि मैंने इसे चुना, इनमें से बहुत से ऐसे हैं जहां आपको बदलाव की प्रशंसा करने के लिए इस तरह का विलाप मिलता है, मूल रूप से क्योंकि इसमें निर्गमन का रूपांकन है और मिस्र से निर्गमन और प्रशंसा के लिए आंदोलन है। और फिर मुक्ति और प्रशंसा की व्यक्तिगत कहानी भी। और इसलिए यह वास्तव में एक अच्छी ध्वनि है।

तो आइए मैं यहां कुछ छंद पढ़ता हूँ। सबसे पहले, मैं उस चीज़ से शुरुआत करना चाहता हूँ जिसे एक्सोडस मोटिफ कहा जाएगा। अंततः, मुझे उम्मीद है कि इस वसंत में हम न्याक कॉलेज के डॉ. डेविड इमानुएल, डेविड इमानुएल को टेप करने में सक्षम होंगे, जो भजनों में एक्सोडस रूपांकन के साथ बहुत अच्छा काम करते हैं।

उन्होंने स्तोत्रों में निर्गमन रूपांकन की इस धारणा पर इज़राइल में अपना शोध प्रबंध लिखा। और यदि किसी ने मैथ्यू की पुस्तक भी पढ़ी है जहां यीशु को नए मूसा और नए निर्गमन की तरह चित्रित किया गया है। तो, यह निर्गमन रूपांकन पूरे पवित्रशास्त्र में दोहराया गया है।

निर्गमन पुराने नियम का महान मुक्तिदायी कार्य था। जैसे कि यीशु एक महान मुक्तिदायी कार्य है, जो हमें नए नियम में पाप की गुलामी से मुक्त कराता है, निर्गमन ने मिस्र में इस्राएलियों को उनकी गुलामी से मुक्त कराया, पुराने नियम में यह महान मुक्तिदायक कार्य है। तो यहाँ यह भजन 66 श्लोक पाँच से नौ में है, आओ और देखो कि परमेश्वर ने क्या किया है, मनुष्य के पक्ष में उसके कार्य कितने अद्भुत हैं।

उसने समुद्र को सूखी भूमि में बदल दिया। और वहाँ आपके पास यह है, निर्गमन लाल सागर या रीड सागर के पार आ रहा है। वे पैदल ही पानी से होकर गुजरते हैं।

आओ और हम उसमें आनन्द मनायें। क्या तुम्हें याद है लाल सागर पार करने के बाद सबसे पहले क्या हुआ था? क्या आपको समुद्र का वह गीत याद है जो मरियम ने उसके तुरंत बाद गाया था? और इसलिए, यह दिलचस्प है कि मिस्र से इस महान मुक्ति के बाद, एक गीत है जो निर्गमन 15 में आता है, वहाँ एक तरह का दिलचस्प संबंध है। उसने समुद्र को सूखी भूमि में बदल दिया।

वे पैदल ही पानी पार करते हैं। आओ, हम उसमें आनन्द मनाएँ। वह अपनी शक्ति से सर्वदा शासन करता है।

उसकी आँखें राष्ट्रों पर नज़र रखती हैं। विद्रोही उसके विरुद्ध न उठें। और वह जाता है, हे हमारे परमेश्वर की स्तुति करो, हे लोगों, उसकी स्तुति का शब्द सुनाओ।

उसने हमारे जीवन की रक्षा की है और हमारे पैरों को फिसलने से बचाया है। प्राचीन इस्राएल के साथ भी ऐसा ही था। वे सामने आए, भगवान की स्तुति करो।

उसने हमारे पैरों को फिसलने से बचाया, हमें मिस्र से बचाया, इस तरह की चीजों से। अब स्विच करें, आइए व्यक्ति पर चलते हैं। भजन 66 फिर मिस्र के उद्धार से व्यक्ति की प्रशंसा की ओर बढ़ता है।

वह कहता है, हे परमेश्वर से डरनेवालो आओ, सुनो, मैं तुम से कहता हूँ, कि उस ने मेरे लिये क्या किया है। अब यह सिर्फ ईश्वर का राष्ट्रीय उद्धार और महान मुक्तिकारी कार्य नहीं है, बल्कि यह है कि उसने मेरे लिए क्या किया है। मैंने अपने मुँह से उसे पुकारा।

उसकी तारीफ मेरी जुबान पर थी. यदि मैं अपने हृदय में पाप रखता, तो यहोवा न सुनता। लेकिन भगवान ने प्रार्थना में मेरी आवाज जरूर सुनी और सुनी है।

भगवान की स्तुति करो जिसने मेरी प्रार्थना को अस्वीकार नहीं किया या मुझसे अपना प्रेम नहीं छीना। फिर से, सुंदर, फिर से, बदलती कहावत, भगवान की स्तुति करो। मैं सचमुच मुसीबत में था।

भगवान ने मेरी मदद की और भगवान की स्तुति की। तो मूल रूप से, इन पाँचों के साथ, मैंने बस वह संबंध बनाने की कोशिश की है। यह सब इस विलाप के भजनों के माध्यम से है जहाँ भजनकार यथार्थवादी है।

प्रशंसा वास्तविकता में टिकी हुई है. ईसाइयों के रूप में, हम वास्तविकता को नकारने और जीवन के दुखों और पीड़ाओं को नकारने की कोशिश नहीं करते हैं। इसके बजाय, हम उन्हें गले लगाते हैं और हम उन्हें गले लगाते हैं और उन्हें लाते हैं और भगवान के उद्धार की प्रतीक्षा करते हैं।

जब हम परमेश्वर के उद्धार को देखते हैं, तो यह हमें परमेश्वर की स्तुति करने का बड़ा कारण देता है। अतः विलाप ही प्रशंसा का आधार है। अब यह एक स्तर है, यह विलाप प्रशंसा से जुड़ा है और यह बदलाव कई भजनों में होता है।

मैं अब किसी ऐसी चीज़ से निपटना चाहता हूँ जो और भी अधिक कठिन है और निस्संदेह अधिक कठिन है और वह है अशुद्धि। निन्दा क्या है? निन्दा तब होती है जब भजनहार, या वास्तव में आप इसे धर्मग्रंथ में कुछ अन्य स्थानों पर भी पाते हैं, जहाँ भजनहार किसी व्यक्ति को शाप देता है। दूसरे शब्दों में, मैं चाहता हूँ कि आपके साथ कुछ बुरा हो।

हम कहते हैं, एक मिनट रुकें, एक मिनट रुकें। इन लांछनों से लोगों को बड़ी नैतिक समस्याएँ हुई हैं। हम आज इन दोषारोपणों के नैतिक निहितार्थों पर चर्चा नहीं करने जा रहे हैं।

ऐसा लगेगा जैसे, मेरा मतलब है, पूरे शोध प्रबंध हैं और वास्तव में, मुझे शोध प्रबंध ऑनलाइन मिल गए हैं। मैं आपको उसका संदर्भ दूंगा। तो, उपदेशात्मक स्तोत्र क्या हैं? ये भजनों का संग्रह हैं।

यहां उपदेशात्मक भजनों की एक सूची दी गई है। ये ऐसे भजन हैं जिनके बारे में जाना जाता है, कि वे तुम्हारे बच्चों को चट्टान पर पटक दें, वे तुम्हें जबड़े में पटक दें, तुम्हें बिना पानी के चट्टान पर स्लग की तरह नष्ट कर दें। तो, भजन 5, 10, 17, 35, 59, 58।

अब, वैसे, 58 हमारे पाठ में है, स्तोत्र की दूसरी पुस्तक, 59। तो 58 और 59 अनुदेशात्मक स्तोत्र हैं। हम 59, 69 और 70 को देखना चाहते हैं।

ये स्तोत्र की दूसरी पुस्तक में चार उपदेशात्मक स्तोत्र हैं। फिर भजन 79, 83, वैसे, यह प्रसिद्ध है, भजन 109, बड़ा प्रसिद्ध उपदेशात्मक भजन। हर कोई उसे उद्धृत करता है, भजन 129।

भजन 137 भी एक प्रकार से निर्वासन के बाद का है, तुमने यरूशलेम को नष्ट कर दिया और अब तुम होने जा रहे हो, हम आशा करते हैं कि तुम भी उसी तरह नष्ट हो जाओगे। तो, भजन 109, 137, अगर मुझे दो चुनना हो, तो वे दो शायद उनमें से सबसे प्रसिद्ध हैं। अब हमारे लिए, यह भजन 58, 59, 69, और 70 होगा।

ये हैं प्रसिद्ध और फिर प्रसिद्ध हैं ये दो शत्रु के विनाश का आह्वान। अब मैं सिर्फ एक टिप्पणी करना चाहता हूँ. अतः वे उपदेशात्मक स्तोत्र कहलाते हैं।

और इसलिए, मैं सोच रहा हूँ, ठीक है, 58, 59, 69, 70, ये चार हैं जिनसे मुझे निपटना है। नहीं, मैंने स्तोत्रों को पढ़ते हुए पाया, जिसने भी स्तोत्रों को बहुत अधिक पढ़ा है, वह यह है कि पूरे स्तोत्र में ढेर सारे अनुदेशात्मक कथन हैं, लेकिन फिर भी वे इन्हें अनुपयुक्त स्तोत्रों के रूप में वर्गीकृत नहीं करते हैं। वे छोटे बयान हैं, मूल रूप से निंदा करते हैं और दुश्मन पर निर्णय लेने का आह्वान करते हैं, लेकिन उन्हें वर्गीकृत नहीं किया जाता है।

इसलिए, मैं जो करना चाहता हूँ वह यह है कि मैं कई ऐसे अनुदेशात्मक कथनों से गुज़रूंगा जो अनुदेशात्मक भजनों में नहीं पाए जाते हैं। इसलिए, मैं कुछ शैली विश्लेषण के साथ समस्या के बीच अंतर करना चाहता हूँ। और वैसे, गुंकेल और अन्य लोगों ने विलाप स्तोत्र, भजनों के स्तोत्र, विलाप के व्यक्तिगत और सांप्रदायिक स्तोत्र, और ज्ञान के अन्य उपदेशात्मक स्तोत्रों को जानने की शैली के संदर्भ में जो किया है, उसके लिए मैं बहुत आभारी हूँ।

वे बहुत उपयोगी, बहुत उपयोगी वर्गीकरण हैं। हालाँकि, आपको बहुत सावधान रहना होगा ताकि शैली वर्गीकरण यह कहने के लिए आपकी आँखें बंद न कर दे कि, यहाँ अनुपयुक्त भजन 58, 59, 69, 70 हैं। और मैं कह रहा हूँ, नहीं, वे सभी जगह हैं।

तो, कहने को तो, आपके पास समझाने के लिए केवल उन चार भजनों से कहीं अधिक है। आप उन चार भजनों को अलग-अलग नहीं कर सकते। और फिर चूँकि कुछ लोगों को दोषारोपण से निपटना पसंद नहीं है, वे उन्हें कम करने के लिए, उन्हें छोड़ देने के लिए, उन्हें यहाँ तक कि कुछ लोगों को शैतान कहने के लिए, कि वे शैतानी हैं, हर तरह की चीज़ें करेंगे।

यीशु कहते हैं, क्या? अपने शत्रु से प्रेम करो. आप अपने शत्रु के विरुद्ध प्रार्थना नहीं करते। और इसलिए ये सभी वास्तव में पवित्र लोग फिर अपमान के बारे में यह बात लेकर आते हैं।

वैसे, क्या निंदाएँ परमेश्वर के वचन का हिस्सा हैं? हां, वे। और इसलिए, मुझे लगता है कि हमें उन्हें खारिज करने के बजाय उन्हें समझने की कोशिश करने की जरूरत है। मैं इसे फिर से कहना चाहता हूँ, यह बहुत महत्वपूर्ण है।

मुझे लगता है कि हमें उन्हें खारिज करने के बजाय उन्हें समझने की कोशिश करने की जरूरत है। तुम्हें सावधान रहना होगा। लोग पवित्रशास्त्र में से चुन लेते हैं कि उन्हें क्या पसंद है और क्या पसंद नहीं है।

और इसलिए, आपके पास जो कुछ है वह यह है कि हमें पवित्रशास्त्र के सुखद हिस्से पसंद हैं और यह कुछ कठिन चीजें हैं। और इसलिए, मैं बस यही चाहता हूँ कि हम पूरी चीज़ की कठोरता से न गुजरें। मैं आपको कुछ ऐसे संसाधनों के बारे में बताऊंगा जो ऐसा करते हैं, लेकिन इससे सावधान रहें और वे कैसे काम कर रहे हैं।

मैं यहां जो करना चाहता हूँ वह एक प्रकार का मॉडल प्रस्तुत करना है। और जब मैं इस बारे में सोच रहा था, मैं समझने के लिए एक मॉडल लेकर आया और मैं उस तरह के मॉडल का उपयोग करना चाहता हूँ जो पहले से ही है, लेकिन अभी तक नहीं मॉडल है जो मूल रूप से जॉर्ज एल्टन लैड ने भगवान के राज्य के लिए नए नियम के लिए विकसित किया था। मैं इसे पहले ही लागू करना चाहता हूँ, लेकिन अभी तक अशुद्धि के मुद्दे पर नहीं।

तो, आपके पास पहले से ही वह अतीत है। ये ऐसे दोष हैं जो पहले ही घटित हो चुके हैं, श्राप है कि भगवान ने वास्तव में किसी का न्याय किया है जो पहले ही घटित हो चुका है। और उन बातों का वर्णन भजनों में किया गया है।

फिर आपके पास भविष्य भी है या अभी नहीं है। ये अभी आने बाकी हैं। यह भविष्य का फैसला है।

और फिर आपके पास वह वर्तमान है जहां वह कहता है, दूसरे शब्दों में, भगवान नीचे आएँ और इन लोगों को दांतों से कुचल दें, इस तरह की बात। क्या वह इन लोगों को नष्ट कर सकता है? तो वह वर्तमान होगा।

इसलिए, मैं इस मॉडल को स्थापित करना चाहता हूँ और मुझे लगता है कि यह बड़े संदर्भ में अशुद्धि को देखने में मददगार है। तो, यहाँ, सबसे पहले, भगवान राजा है। ईश्वर राजा है और राजा के रूप में उसका न्याय किया जाता है।

सुलैमान, आपको 1 राजा 3 में उसका धर्मपूर्वक न्याय करने का उल्लेख याद है। और आपको याद है कि मूसा इस्राएल के लोगों का न्याय कर रहा था और परेशान हो रहा था क्योंकि संख्या 11 में उसके लिए बहुत कुछ है। तो मूल रूप से, भगवान राजा है।

वह एक न्यायाधीश है और उसका काम ईश्वर है और राजा का काम उद्धार करना, भजनहार को बचाना है। परन्तु भजनहार को बचाने का एक भाग उसे छुड़ाना और शत्रु, दुष्टों को नष्ट करना

होगा। अतः राजा का काम उद्धार करना और बचाना दोनों है, परन्तु दुष्टों और शत्रुओं को नष्ट करना और न्याय देना भी है।

तो, आपके पास भजनों में जो कुछ है, वह इस बारे में बात करता है कि भगवान ने पहले से ही क्या किया है। भगवान ने दुष्टों का नाश कब किया? खैर, मिस्र में विपत्तियाँ और लाल सागर के माध्यम से जाना, वह विजय जिसके द्वारा फिलिस्तीन की भूमि में एमोरियों को नष्ट कर दिया गया था। व्यक्तिगत मुक्ति वह है जहाँ भजनहार स्वयं स्वीकार करता है, भगवान ने मुझे बचाया है और दुश्मन को नष्ट कर दिया है।

विलाप, इस बदलाव की प्रशंसा करने जा रहा हूँ जो घटित होता है कि हमने देखा है कि यह भी घटित होता है कि भगवान ने उसे पहले ही बचा लिया है। अब यह पहले से ही है। अभी तक नहीं के बारे में क्या? स्तोत्र की पुस्तक में, यह भविष्य का वर्णन करता है।

यह इसे उद्धारण के रूप में वर्णित नहीं करता है, प्रभु का दिन, जैसा कि आप अंदर आते हैं, जोएल की किताब या ऐसा कुछ कहें। परन्तु प्रभु के दिन जैसी प्रकार की बातों का वर्णन किया गया है। भगवान कहते हैं मैं शत्रु को नष्ट कर दूंगा।

दुष्टों का विनाश एक ऐसी चीज़ है जिसके बारे में परमेश्वर ने कहा है कि वह भविष्य में ऐसा करेगा। वह करेगा, अभी नहीं, वह करेगा। और फिर धर्मियों का उद्धार, कब तक? मुझे लगता है कि याद रखें कि हमें वह कथन कैसे मिलता है, हे भगवान, आप मुझे कब तक भूलेंगे? कि कब तक यह कथन इस बात से संबंधित है कि ईश्वर भविष्य में शत्रुओं का नाश करेगा।

और इसलिए, भजनहार तब और अब और भविष्य के बीच फंस गया है। और इसलिए, वह पूछता है कि ऐसा होने में कितना समय लगेगा? और फिर स्तुति करने का व्रत कहता है, हे भगवान, यदि ऐसा होता है, भविष्य की स्तुति, भविष्य की स्तुति, मैं वादा करता हूँ, मैं वादा करता हूँ, मैं भविष्य में आपकी स्तुति करने की प्रतिज्ञा करता हूँ। तो, फिर हमारे निहितार्थ में जो है वह है, वह हो सकता है और यही भजनकार की आशा है।

इसके बाद भजनकार ने निहितार्थ प्रस्तुत किया है कि उसे छुटकारा दिलाया जाएगा, शत्रु को नष्ट कर दिया जाएगा और न्याय होगा। लेक्स टैलियोनिस, न्याय वैसा ही होगा जैसा आपने दूसरों के साथ किया है। अब तुम्हारे लिये भी वैसा ही किया जाएगा जैसा तुम मुझे नष्ट करने के लिये उसके पीछे आये थे।

अब तुम नष्ट हो जाओगे. क्या तुम्हें मिस्र के पहिलौठे पुत्र फिरौन की याद है? वह इस्राएल के पुत्रों को नष्ट करने जा रहा था। और पता चलता है कि फिर उसका अपना बेटा ही इसमें मर जाता है।

प्रतिशोध, परमेश्वर की महिमा, और स्तुति का वादा जो इन निहितार्थों से निकलता है। तो, मैं जो सुझाव देने का प्रयास करने जा रहा हूँ वह यह है कि प्रशंसा के वादे का आधार निहितार्थ है। निहितार्थ प्रशंसा से जुड़ा है।

तो, यह सब केवल प्रतिशोध और उस तरह की चीज़ के बारे में नहीं है। अब मैं इसे थोड़े से संदर्भ में रखने जा रहा हूँ, और फिर हम यहां भजन की इस पुस्तक में इस पर विचार करेंगे। हम यीशु की टिप्पणियों से जूझते हैं, आप जानते हैं, अपने शत्रु से प्रेम करें, उन लोगों के लिए प्रार्थना करें जो आपका अनादरपूर्वक उपयोग करते हैं।

मैं उस समस्या का समाधान नहीं करने जा रहा हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि हमें वापस जाकर यीशु की टिप्पणियों को फिर से समझने की कोशिश करनी चाहिए क्योंकि वैसे, यीशु ने अपने दुश्मनों से बहुत दृढ़ता से बात की थी। हाय, हे कपटी शास्त्रियों और फरीसियों, तुम में जो चमत्कार किए गए हैं वे सदोम और अमोरा में किए गए हैं। वे आज तक बने रहेंगे।

यीशु ने कहा, यह तुम्हारे लिए बेहतर होगा यदि तुम कभी पैदा ही न हुए होते। इसलिए जब आपको यह प्यारा-प्यारा यीशु मिले तो सावधान रहें, अपने दुश्मनों और इस तरह की सभी चीज़ों से प्यार करें। यीशु के पास अपने शत्रुओं के लिए कुछ सचमुच कठोर कथन थे।

तो सावधान रहो। और इसलिए, मैं कह रहा हूँ कि मुझे लगता है कि मैथ्यू 5.44 में उस अनुच्छेद की आवश्यकता है, आप एक श्लोक नहीं लेते हैं और इसे पूरी बाइबिल पर मैप नहीं करते हैं क्योंकि आपको मिल गया है, बाइबिल उससे कहीं अधिक विविध है। आपको चीज़ों को उनके व्यापक संदर्भ में समझना होगा।

इसलिए, मैं निंदा के उस संदर्भ को प्रशंसा के संदर्भ में रखना चाहता हूँ। वैसे, अब, यदि आप कहते हैं कि सभी दोषारोपण शैतानी है, जैसा कि कुछ लोगों ने कहा है, तो अपने शत्रु के विनाश के लिए प्रार्थना करना दुष्टता है। फिर जॉन डे ने रहस्योद्घाटन अध्याय छह, श्लोक नौ, पांचवें मुहर निर्णय, स्वर्ग में वेदी के नीचे आत्माओं की ओर जो इशारा किया है, उसके साथ आप क्या करते हैं।

अभी तो यह स्वर्ग में है। हम कहेंगे कि आत्माएं, शहीद जो स्वर्ग में हैं, वे स्वर्ग में नहीं रहेंगे, आप जानते हैं, आप यह नहीं कह सकते, ठीक है, भजनकार बस गड़बड़ हो गया था। ऐसा बहुत से लोग कहते हैं।

भजनहार, अरे हाँ, भजनहार अच्छा है, लेकिन वह भी एक इंसान है। तो, उसे ये सारी समस्याएँ और अभिशाप मिले हैं। वे उन समस्याओं में से एक हैं।

नहीं, नहीं, ये लोग स्वर्ग में हैं। वे भगवान की वेदी के नीचे हैं। और वे परमेश्वर की वेदी के नीचे क्या प्रार्थना कर रहे हैं? आइए मैं आपको यह पढ़कर सुनाता हूँ।

यह प्रकाशितवाक्य अध्याय छह, श्लोक नौ है। अब आप जो कहते हैं, ओह, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक, कोई भी इसे नहीं समझता है। नहीं, नहीं, यह बिल्कुल स्पष्ट है कि वे क्या प्रार्थना कर रहे हैं।

स्वर्ग खुला है, पाँचवीं मुहर। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक की मुहरें, सात मुहरें, सात तुरहियाँ और सात कटोरे याद रखें। तो, अगली मुहर, स्कॉल खोला जा रहा है।

और जैसे ही वह खोला जाता है, प्रत्येक मुहर, वह सील जो बंद हो जाती है, पुस्तक के खुले होने के कारण टूट जाती है। यह स्कॉल नंबर पांच है। इसमें कहा गया है, जब उसने पाँचवीं मुहर खोली, तो मैंने वेदी के नीचे उन लोगों की आत्माओं को देखा जो परमेश्वर के वचन के कारण मारे गए थे।

दुश्मनों के बारे में बात करें। वास्तव में दुश्मनों ने इन लोगों को पकड़ लिया था। वे परमेश्वर के वचन के कारण मारे गये थे।

वैसे, मुझे यह अवश्य कहना चाहिए, यह 2018 है और मुझे इस्लामिक स्टेट नाम के एक व्यक्ति द्वारा भूमध्य सागर के किनारे खड़े ईसाई भाइयों को देखना पड़ा है। क्या मैं इसका नाम बताने का साहस कर सकता हूँ? और उन्होंने मसीह में हमारे 21 भाइयों और बहनों के सिर काट दिए, जबकि उनका खून भूमध्य सागर में जा रहा था। हमें कितनी बार उस तरह की चीज़ देखनी पड़ी है जहाँ विश्वासियों को मार दिया जाता है? और दुनिया क्या कहती है? यह लगभग दो मिनट तक टेलीविजन पर चलता है और फिर यह हमारे पास से ही चला जाता है और ऐसा लगता है जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

मोसुल जाओ. इराक में मोसुल वह स्थान है जहां टाइग्रिस नदी के ऊपर एक प्राचीन नीनवे था। मैंने आखिरी महिलाओं में से एक को मोसुल छोड़ते हुए देखा।

मेरा मानना है कि वहां एक लाख ईसाई थे और वह वहां से जाने वाली आखिरी व्यक्ति थीं। वह एक अपंग महिला थी और उसने मोसुल छोड़ दिया। मोसुल से एक लाख ईसाई विस्थापित हुए।

दुनिया कहां कुछ कह रही है? आज सीरिया में ईसाइयों का कत्लेआम हो रहा है। और फिर सीरिया में ईसाइयों का ये नरसंहार, क्या कहती है दुनिया? दुनिया कहती है, ओह, नहीं. और फिर हम इसे नजरअंदाज कर देते हैं क्योंकि यह कौन कर रहा है।

और हम नहीं चाहते कि हमें किसी भी चीज का फोबिया माना जाए। मुझे इस पर छूटने के लिए खेद है। जब यह मारे गए लोगों की आत्माओं के बारे में कहता है, तो हम एक ऐसी पीढ़ी में रहते हैं जहां किसी भी अन्य पीढ़ी की तुलना में अधिक ईसाई मारे गए हैं।

और यह कहने की जरूरत है. अब जो मारे गये, वे क्या कहते हैं? ओह, भगवान बस उनसे प्यार करते थे। सब कुछ।

हे पिता, इन्हें क्षमा कर दो। वे नहीं जानते कि वे क्या करते हैं. फिर भी यह शायद इसका हिस्सा है।

क्या हम जटिल प्राणी हैं? क्या हमारे अंदर अनेक भावनाएँ हैं? तो, हममें से एक भाग, हाँ, पिता, उन्हें क्षमा करें। लेकिन असल में ये लोग क्या कहते हैं? वैसे, यह रहस्योद्घाटन की पुस्तक में है। यह स्पष्ट है कि जो लोग परमेश्वर के वचन और उनके द्वारा दी गई गवाही के कारण मारे गए हैं, वे ऊँची आवाज़ में चिल्लाते रहे, कितनी देर तक, परिचित लग रहे थे? प्रभु, कब तक पवित्र और

सच्चे प्रभु, जब तक आप पृथ्वी के निवासियों का न्याय नहीं करेंगे और हमारे खून का बदला नहीं लेंगे।

काफी सशक्त बयान. फिर, हम उसे छोड़ देते हैं। हम उसे छोड़ देते हैं क्योंकि यह ईसाई धर्म के साथ हमारे प्यारे-प्यारे प्रकार के सामान में फिट नहीं बैठता है।

स्वर्ग में आत्माएँ यही प्रार्थना करती हैं। क्या वे ऐसी प्रार्थना करने के लिए पापी हैं? मुझे क्षमा करें, वे स्वर्ग में हैं। आपको उनसे अधिक अपने पापों पर ध्यान देना होगा।

तो वैसे भी, मैं स्थिति की जटिलता दिखाने के लिए इनमें से कुछ मुद्दों को सामने ला रहा हूँ। यह कोई सरल समाधान नहीं है. उस व्यक्ति से सावधान रहें जिसके पास इसका सरल समाधान है, जिसमें मैं भी शामिल हूँ।

यह यहां एक जटिल मुद्दा है और हम जटिल चीजों से जूझ रहे हैं। तुम जानते हो कि मैं क्या कह रहा हूँ? जीवन केवल एक ही नहीं है और हम हमेशा किसी स्थिति पर एक ही तरीके से प्रतिक्रिया करते हैं। अब मैं इन्हें यहां रखता हूँ ताकि आप लोग वास्तव में इन्हें प्राप्त कर सकें।

जॉन डे ने इस पर काफी काम किया है. उनके पास क्राइंग फ़ॉर जस्टिस नाम की एक किताब है। उनका शोध प्रबंध भी अशुद्धि की इसी धारणा पर था।

उन्होंने 159, 2002 में बिब्लियोथेका सैक्रा, डलास सेमिनरी में एक लेख भी प्रकाशित किया। मूल रूप से, ये दोनों, शोध प्रबंध और उनका लेख मेरी वेबसाइट पर हैं और आप इसे एक प्रकाशित पुस्तक के रूप में खरीद सकते हैं। चेलमर मार्टिन ने प्रिन्सटन थियोलॉजिकल रिव्यू, स्तोत्रों में व्याख्या लिखी।

यह मेरी वेबसाइट, गॉर्डन कॉलेज पर भी निःशुल्क उपलब्ध है। यह 1903 में किया गया था। इसलिए, यहां के पत्रों से कॉपीराइट खत्म हो गया है।

इसे एक क्लासिक, स्तोत्रों की व्याख्याएँ माना जाता था। संभवतः सबसे अच्छी किताब जो मुझे सबसे अच्छी लगती है वह मुफ्त नहीं है और किताब खरीदने लायक है। यह इस एरिक जेंगर द्वारा है और यह प्रतिशोध का देवता है, दैवीय क्रोध के भजनों को समझना।

मेरी राय में, यह शायद सबसे अच्छी किताब है, इस पर सबसे अच्छी किताब है। मैं इसकी तारीख के बारे में निश्चित नहीं हूँ, लेकिन यह बिल्कुल हालिया है। मैं इसे उस विषय पर सर्वश्रेष्ठ पुस्तक मानूंगा।

तो वे तीन संसाधन, उनमें से दो ऑनलाइन मुफ्त हैं। अब, मैं मॉडल से शुरुआत करता हूँ। मॉडल, सबसे पहले, यह है कि ईश्वर राजा है और उसने मिस्र में पहले ही न्याय कर दिया है और वह पहले ही न्याय कर चुका है।

इसलिए, मैं पहले से ही शुरुआत करना चाहता हूँ। फिर हम अभी नहीं, भविष्य की ओर बढ़ेंगे, वह क्या करेगा, और फिर हम दोषारोपण पर वापस आएंगे। तो सबसे पहले, मैं भजन 44 श्लोक दो और तीन से शुरू करता हूँ।

वह पहले भी शत्रु का नाश कर चुका है। वह पहले भी शत्रु का नाश कर चुका है। यहोशू की विजय का उल्लेख भजन 44 श्लोक दो और तीन में किया गया है।

तू ने अपने हाथ से राष्ट्रों को निकाल दिया। तू ने हमारे पुरखाओं को रोपा, और जाति जाति को कुचल डाला, और हमारे पुरखाओं को फला-फूला। यह उनकी तलवार से नहीं था कि उन्होंने देश जीता, न ही उनके हाथ ने उन्हें जीत दिलाई।

यह आपका दाहिना हाथ, आपकी बांह और आपके चेहरे की रोशनी थी क्योंकि आप उनसे प्यार करते थे। अब, भगवान ने ऐसा क्यों किया? क्या यह प्रतिशोध था? नहीं, परमेश्वर ऐसा इसलिए कर रहा था क्योंकि वह अपने लोगों से प्रेम करता था और उसने उन्हें बचाया और उन्हें वह भूमि दी जिसका वादा उसने इब्राहीम, इसहाक और याकूब से किया था। तो, मिस्र में विजय का उल्लेख किया गया है।

भजन 53 पिछले निर्णयों के शैक्षणिक कार्य के बारे में बात करता है। पिछले निर्णय का शैक्षणिक कार्य। और इसलिए, वह जो कहता है, वह फिर से है, मैं यह दिखाने की कोशिश कर रहा हूँ कि यह भगवान नहीं है।

जब वह दुष्टों के साथ काम करता है और जब परमेश्वर धर्मियों के साथ काम करता है, तो क्या उसके कई उद्देश्य होते हैं? क्या आपके जीवन में उसके कई उद्देश्य हैं? आपके जीवन के विभिन्न समयों में, भगवान ने किसी न किसी तरीके से आपके साथ काम किया है। वह एक अच्छे माता-पिता हैं। क्या एक अच्छे माता-पिता हमेशा अपने बच्चे के प्रति एक जैसी प्रतिक्रिया करते हैं? नहीं, माता-पिता कोई रोबोट नहीं हैं।

दरअसल, अब हमारे पास स्मार्ट रोबोट हैं। तो शायद यह एक खराब चित्रण है, लेकिन वह कोई रोबोट नहीं है। माता-पिता हर बार एक ही काम नहीं करते।

मैं और मेरा भाई बस इसी बारे में बात कर रहे थे। जब मैं छोटा था, मैंने जानबूझ कर पड़ोसी के घर पर पत्थर फेंका क्योंकि मुझे पर दांव लगाया गया था कि मैं तीसरी मंजिल की खिड़की से टकराकर उसे गिरा नहीं सकता। मुझे लगा कि मेरे पिता मुझे मार डालेंगे।

सचमुच, मैं मौत से डर गया था। मेरे पिता घर आ गए। मेरे पिता बहुत सख्त अनुशासनप्रिय थे।

और जब वह घर पहुंचा तो मैं चौंक गया। मैं उम्मीद कर रहा था कि यह वास्तव में बुरा होने वाला है। और वह, इसे बुरा बनाने के बजाय, उसके बारे में एक नम्रता थी।

इसलिए, मैं जो कह रहा हूँ वह यह है कि एक अच्छे माता-पिता को पता होता है कि कब अपने बच्चों के प्रति अलग-अलग तरीकों से प्रतिक्रिया देनी है। तो, भगवान हमारे प्रति कई तरीकों से

प्रतिक्रिया करते हैं और वह दुश्मनों के प्रति भी विभिन्न तरीकों से प्रतिक्रिया करते हैं। तो यहाँ हम भजन 53 में हैं, भजन की पुस्तक दो, छंद चार और पाँच, क्या दुष्ट लोग कभी नहीं सीखेंगे? जो मेरी प्रजा को मनुष्य की नाई रोटी खाते हैं, वे परमेश्वर का नाम नहीं लेते।

वहाँ वे भय से अभिभूत थे जहाँ डरने की कोई बात नहीं थी। परमेश्वर ने उन लोगों की हड्डियाँ बिखेर दीं जिन्होंने तुम पर आक्रमण किया था। परमेश्वर ने उन लोगों की हड्डियाँ बिखेर दीं जिन्होंने तुम पर आक्रमण किया था।

तुमने उन्हें लज्जित किया क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें तुच्छ जाना। परमेश्वर ने उनका तिरस्कार किया। क्या भगवान लोगों से घृणा करते हैं? जाहिर तौर पर।

इन शत्रुओं को, भगवान ने उनकी हड्डियाँ बिखेर दीं, नष्ट कर दिया। तो अतीत में, भगवान ने ऐसा किया है। उसने लोगों को नष्ट कर दिया है।

उसने उनकी हड्डियाँ बिखेर दी हैं। उसने उनका और उस तरह की चीज़ों का तिरस्कार किया है। तो यहाँ एक शैक्षणिक कार्य है।

यह सिर्फ शुद्ध प्रतिशोध नहीं है। यह मूल रूप से कह रहा है कि दुष्ट लोगों को उस पर गौर करना चाहिए और उन्हें सीखना चाहिए। उन्हें देखना चाहिए और उससे सीखना चाहिए।

तो, यहाँ एक शैक्षणिक कार्य है। निहितार्थ केवल प्रतिशोध नहीं हैं। इन चीज़ों के पीछे कई मकसद हैं।

मुझे लगता है कि इसे और अधिक सामने लाने की जरूरत है। यहाँ अध्याय 57 में एक ओवर है। तो हम 53, 57 पर चले गए हैं, और यह एक लेक्स टैलियोनिस प्रकृति है।

लेक्स टैलियोनिस का अर्थ है प्रतिशोध का नियम। एक आँख के बदले एक आँख, दो के बदले दो। अब हमारे लिए, हम कहेंगे आँख के बदले आँख, दो के बदले दो, यह भयानक फैसले जैसा लगता है।

लेकिन यह जो कह रहा है वह यह है कि अपराध की सज़ा उचित होनी चाहिए। समता होनी चाहिए। अपराध और सजा के बीच समानता होनी चाहिए।

उनके बीच समानता होनी चाहिए। अतिप्रतिक्रिया नहीं होनी चाहिए। हमारे मामले में, कई देशों में, इस पर कम प्रतिक्रिया नहीं होनी चाहिए।

तो लेक्स टैलियोनिस, जैसा तुमने किया है, वैसा ही तुम्हारे साथ भी किया जाएगा। भजन संहिता 57 पद छः, उन्होंने मेरे पांवोंके लिथे जाल फैलाया। मैं झुक गया और व्यथित हो गया।

उन्होंने मेरे रास्ते में एक गड्ढा खोदा। यहाँ क्या नकारात्मक बात हो रही है? उन्होंने मेरे लिये गड़हा खोदा, परन्तु वे आप ही उसमें गिर पड़े। जो वे दूसरों के साथ करने गए थे वही अब उनके साथ हो गया है।

तो यह एक लेक्स टैलियोनिस है। तो, यहां न्याय का मकसद है। जैसा कि आपने किया है, उसका उद्देश्य न्याय है।

तो इससे आपका काम हो जायेगा. चलिए अब विषय बदलते हैं और आगे बढ़ते हैं, वह पहले ही यह कर चुका है। ऐसा पहले ही हो चुका है.

अब वह क्या कहता है क्या होगा? अभी तक क्या नहीं हुआ? भविष्य में शत्रु का विनाश, चीजों का अभी तक पक्ष नहीं। भजन 50 श्लोक चार लगभग प्रभु के एक दिन की तरह वर्णन करता है। वह ऊपर आकाश और पृथ्वी को बुलाता है ताकि वह अपने लोगों का न्याय कर सके।

वह आकाश और पृथ्वी को बुलाता है ताकि वह अपने लोगों का न्याय कर सके। परमेश्वर स्वयं एक अचूक न्याय, अपने ही लोगों पर आने वाले अभिशाप के न्याय की चेतावनी दे रहा है। ठीक है।

तुम जो परमेश्वर को भूल जाते हो, इस पर विचार करो। अब यह अगला मामला है जिसे हम सामने लाना चाहते हैं। यह बहुत दिलचस्प है क्योंकि आपने स्वयं भगवान को लोगों को समय से पहले चेतावनी देते हुए एक अचूक अभिशाप की पेशकश करते हुए सुना है।

बेहतर होगा कि आप यहां अपना कार्य एक साथ कर लें। और इसलिए यहां आपको स्वयं भगवान मिल गए हैं। तो, आप बस यह नहीं कह सकते, ओह, यह भजनहार है और भजनहार यह सब प्रतिशोधी, दुष्ट व्यक्ति है जो अपने दुश्मन से प्यार नहीं करता।

और यह पुराना नियम है. तो, यह वैसे भी मायने नहीं रखता। नहीं, नहीं, नहीं।

यह ईश्वर बोल रहा है और यह भजन अध्याय 50 श्लोक 22 में है, जहां ईश्वर स्वयं एक अनिश्चित भविष्य के फैसले में बोलता है। परमेश्वर यही कहता है, तुम जो परमेश्वर को भूल जाते हो, इस पर विचार करो, नहीं तो मैं तुम्हें टुकड़े-टुकड़े कर दूंगा, और कोई छुड़ानेवाला न होगा। तुम्हें कोई नहीं बचा सकता.

भगवान बचानेवाला है. मैं तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा। यह बहुत सशक्त बयान है.

वह भगवान से आ रहा है. भगवान के उद्घरणों में, मैं तुम्हें टुकड़े-टुकड़े कर दूँगा। इसलिए, आप केवल अभद्रता को खारिज नहीं कर सकते।

नहीं, नहीं, आप ऐसा नहीं कर सकते। अध्याय 52 श्लोक पांच, और यह एदोमी दोग के विरुद्ध भजन है, जिसने नोब के याजकों को मार डाला, जिन्होंने दाऊद को सांत्वना दी, और दाऊद को

गोलियत की तलवार और भोजन दिया। भजन 52, निश्चित रूप से भगवान तुम्हें ले आएगा, डोएग या दुष्ट, वह दुष्टों के लिए खड़ा है, हमेशा के लिए विनाश के लिए।

वह तुम्हें छीन लेगा और तुम्हारे डेरे से उखाड़ देगा। वह तुम्हें जीवितों की भूमि से उखाड़ देगा। काफी सशक्त बयान.

भगवान तुम्हें छीन लेगा और तुम्हें नीचे ले जाएगा। यह बुरी बात है। तो, भविष्य के लिए एक और।

भजन 53 पद 23, हम इनसे शीघ्रता से निपटेंगे। परन्तु हे परमेश्वर, तू दुष्टों का नाश करेगा। परमेश्वर के कार्य का एक भाग, आप दुष्टों को क्षय के गड्ढे में गिरा देते हैं।

खून के प्यासे और धोखेबाज अपने आधे दिन भी जीवित नहीं रहेंगे। लेकिन जहाँ तक मेरी बात है, मुझे तुम पर भरोसा है। परमेश्वर दुष्टों का नाश करने जा रहा है।

वह दुष्टों का नाश करेगा। लेकिन जहाँ तक मेरी बात है, मुझे तुम पर भरोसा है। सुंदर कथन, भजन 55 श्लोक 23.

अब भगवान भविष्य में यही करेंगे। भविष्य में निर्णय आने वाला है। भगवान ने इसके बारे में चेतावनी दी है और उन्होंने इसे स्थापित किया है और यह कह रहा है कि दुष्ट, बुरी चीजें होने वाली हैं।

भविष्य में इन लोगों पर कुछ श्राप आने वाले हैं। बुरी चीजें होने वाली हैं। और इसलिए भविष्य.

अब, भजनहार की सहभागिता वाले वर्तमान के बारे में क्या? यह अब मई की ओर बढ़ रहा है वह, यह अभिप्राय है। मैं यहां प्रशंसा के आधार के रूप में गाली-गलौज के बीच संबंध को चित्रित करने जा रहा हूँ। अब भजनहार प्रवेश करने जा रहा है।

हाँ, परमेश्वर ने वे कार्य किये जिनसे अतीत में दुष्टों को नुकसान पहुँचाया। और हाँ, वह भविष्य के न्याय के बारे में चेतावनी देता है, लेकिन अब भजनहार जो अपने ही संकट के बीच में है। और अब भजनहार स्वयं, और हम इनमें से कुछ पर काम करेंगे और हम इसे जल्दी से करने का प्रयास करेंगे।

मैं बस इनमें से कुछ को पढ़ूँगा। भजन 52 छंद पांच और छह, भजन 52 छंद पांच और छह। निःसंदेह, हे परमेश्वर, तू उसी अनन्त विनाश की ओर ले जाएगा।

वह तुम्हें छीन लेगा और तुम्हारे डेरे से उखाड़ देगा। वह तुम्हें जीवितों की भूमि से उखाड़ देगा। वह तुम्हें जीवितों की भूमि से उखाड़ देगा।

यार, तुम मर गये। सेला, ध्यानपूर्ण विराम। वह तुम्हें छीन लेगा और तुम्हारे डेरे से उखाड़ देगा।

वह तुम्हें जीवितों की भूमि से उखाड़ देगा। सेला, वहाँ एक तरह का परहेज़ है। अब नीचे, वही भजन 52 श्लोक आठ और नौ।

तो, वह कहते हैं, भगवान तुम्हें उठा लेंगे। यार, मैं तुम्हें फाड़ डालूँगा। वह भजन 52 छंद पांच और छह है।

कुछ छंदों में वह यह कहता है, लेकिन मैं, उनके विपरीत और उनके साथ जो हुआ, उसके विपरीत, मैं भगवान के घर में फलने-फूलने वाले जैतून के पेड़ की तरह हूँ। मुझे ईश्वर के अनंत प्रेम पर सदैव-सर्वदा भरोसा है। तुमने जो किया है उसके लिये मैं सदैव तुम्हारी प्रशंसा करता रहूँगा।

तेरे नाम में, मैं आशा करूँगा कि तेरा नाम अच्छा हो। मैं तेरे पवित्र लोगों के साम्हने तेरी स्तुति करूँगा। और इसलिए, जबकि हाँ, दुष्ट, बुरी चीजें होती हैं, मैं आप पर भरोसा करूँगा और आपकी प्रशंसा करूँगा।

निंदा और प्रशंसा के बीच संबंध को एक के बाद एक दोहराया गया है। यहाँ एक और है, भजन 54 छंद चार से सात तक। स्तोत्र 54 श्लोक चार से सात तक, निःसंदेह ईश्वर मेरा सहायक है।

प्रभु ही है जो मुझे संभालता है। जो लोग मेरी निन्दा करते हैं उन पर विपत्ति लौट आए। अपनी वफ़ादारी से उन्हें नष्ट कर दो।

मैं तुम्हें स्वेच्छाबलि अर्पित करूँगा। और फिर वह कहता है, हे यहोवा, मैं तेरे नाम की स्तुति करूँगा, क्योंकि यह अच्छा है। क्योंकि उस ने मुझे मेरे सब संकटों से छुड़ाया है, और मेरी आंखों से मेरे शत्रुओं पर जय की दृष्टि लगी है।

हाँ, शत्रु पराजित हो गये। यहां जीत हुई है। यह भगवान की जीत है।

यह हमेशा प्रतिशोध के लिए नहीं होता है, लेकिन वह उस जीत के लिए भगवान की स्तुति करता है कि उसकी आंखें गवाह बन गई हैं जहां दुष्टों का विनाश होता है। वह परमेश्वर की स्तुति में बलिदान कर रहा है। भजन संहिता 56 श्लोक नौ, इसी प्रकार की बात है।

तब जब मैं सहायता के लिये पुकारूँगा, तब मेरे शत्रु पीछे हट जायेंगे। तो, दुश्मन उसके पीछे हैं। जब वह मदद के लिए पुकारेगा तो वे पीछे मुड़ जाएंगे।

इससे मैं जान लूँगा कि परमेश्वर मेरे लिये है। दूसरे शब्दों में, शत्रु मुझे नष्ट करने के लिए मेरे पीछे आ रहे हैं। वे पीछे मुड़ते हैं और जब वे पीछे मुड़ते हैं, तो वे कहते हैं, यहाँ एक शैक्षणिक कार्य है।

तब मुझे पता चलता है कि ईश्वर मेरे लिए है, ईश्वर मेरे पक्ष में है। तो, दूसरे शब्दों में, इसका तात्पर्य यह नहीं है कि जब ईश्वर दुष्टों को नष्ट करता है या भजनहार उसे दुष्टों को नष्ट करने के लिए कहता है, तो वहां हमेशा प्रतिशोध नहीं होता है। वह कह रहा है, मैं कुछ सीखूँगा और भगवान मेरी तरफ है।

और इसलिए, एक शैक्षणिक प्रेरणा, एक शैक्षणिक कार्य है। और फिर 57, मुझे यहां देखने दो। यदि हमें 57 मिला है, तो हमने उसे छोड़ दिया है।

मुझे केवल 57 आयतें पांच और छह और आयत 11 पढ़ने दीजिए। उन्होंने मेरे पैरों के लिए जाल फैलाया। मैं झुक गया और व्यथित हो गया।

उन्होंने मेरे मार्ग में गड़हा खोदा, परन्तु उसे अपने ही अन्दर गिरा दिया। और फिर वैसे, यह भजन क्या है? ठीक है। उन्होंने गड़हा खोदा, वे स्वयं गड़हे में गिर गये।

भजनकार ने उनके उस गड़हे में गिरने पर क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की जिसका उपयोग उन्होंने उसे फंसाने के लिए किया था? हे परमेश्वर, स्वर्ग से भी ऊंचे हो जाओ। तेरी महिमा सारी पृथ्वी पर फैले। भजन 57, यही वह है जो हमने अभी कहा था, मैट हॉफलैंड भगवान के साथ गाता है और उसकी महिमा दुष्टों के विनाश के साथ पूरी पृथ्वी पर होती है।

अब भजन 58, क्या आपने देखा है कि यह पहली बार है जब हमने वास्तव में एक अनुदेशात्मक भजन पर विचार किया है। वे सभी अन्य निहितार्थ उद्धरणों, अनुदेशात्मक भजनों में नहीं थे। अब हम एक अनुकरणीय भजन में हैं और देखते हैं क्या होता है।

मैं यहां जो सुझाव देने जा रहा हूं वह यह है कि प्रतिशोध नहीं है, बल्कि यहां एक शैक्षणिक कार्य चल रहा है। दूसरे शब्दों में, इनके साथ कई कार्य चल रहे हैं। तो यह भजन अध्याय 58 श्लोक छह से नौ तक है।

इसमें कहा गया है, उनके मुंह के दांत तोड़ दो। काफी सशक्त बयान. हे भगवान, उनके मुंह के दांत तोड़ दो!

हे भगवान, सिंहों के दाँतों को फाड़ डालो। तो, दांतों पर फोकस यह है कि शेर आता है और खा जाता है, उनके दांत तोड़ देता है। वे धनुष खींचते ही पानी की तरह बह जाएं।

उनके तीरों को ऐसे कुंद कर दिया जाए जैसे स्लग पिघलकर मृत बच्चे की तरह आगे बढ़ता है। वे सूर्य को न देख सकें। वे वास्तव में मजबूत बयान हैं।

इससे पहले कि आपके बर्तनों को कांटों की गर्मी महसूस हो, चाहे वे हरे हों या सूखे, दुष्ट बह जायेंगे। तब लोग कहेंगे, ठीक है, दांत टूटने के परिणामस्वरूप स्लग, मृत बच्चा पैदा हुआ। वह कहता है, तब लोग कहेंगे, निश्चय धर्मियों को अब भी प्रतिफल मिलता है।

निःसन्देह एक परमेश्वर है जो पृथ्वी का न्याय करता है। तो, जब ये शाप दिए जाते हैं तो प्रताड़ना की प्रतिक्रिया होती है, व्यवस्थाविवरण, लैव्यव्यवस्था, व्यवस्थाविवरण 28, लैव्यव्यवस्था 26, 5, 6 में वाचा के शापों को याद रखें, वे वहीं आसपास हैं। जहां भगवान वाचा में आते हैं, वाचा के संदर्भ में, यह आशीर्वाद और शाप के साथ समाप्त होता है।

अब यहाँ भजनहार में शाप वास्तव में व्यक्तिगत आधार पर घटित हो रहे हैं। और ये लोग कहते हैं, जब ऐसा होता है, तो लोग कहते हैं, एक ईश्वर है और वह पृथ्वी का न्याय करता है। तो यह एक उपदेशात्मक स्तोत्र है।

भजन 59, हमारा दूसरा उपदेशात्मक भजन, हमारे पास 58 और 59, दो उपदेशात्मक भजन हैं। 59 कहता है, परन्तु उनको घात न कर, हे प्रभु, हमारी ढाल वा मेरी प्रजा भूल जाएगी। भगवान मैं अपने शत्रु का विनाश क्यों नहीं देखना चाहता? क्योंकि यदि आप उन्हें नष्ट कर देंगे तो लोग भूल जायेंगे।

अमेरिका में क्या हुआ है? लोग नष्ट हो गये. लोग भूल जाते हैं. अपनी शक्ति से उन्हें इधर-उधर घुमाओ और नीचे गिराओ।

क्रोध में उनका उपभोग करो, उनका तब तक उपभोग करो जब तक वे नष्ट न हो जाएं। तब जगत के छोर तक यह ज्ञात हो जाएगा कि परमेश्वर याकूब पर शासन करता है। हे मेरी शक्ति, मैं तेरा भजन गाता हूँ।

फैसले आते हैं और फैसला गिर जाता है. फिर भजनहार मुड़ जाता है और वही आधार बन जाता है। हे मेरे बल, हे परमेश्वर, मैं तेरा भजन गाता हूँ।

हे भगवान, आप मेरे गढ़ हैं, मेरे प्यारे भगवान। वहां सुंदर बदलाव, अभिशापों के साथ वैसा ही हो रहा है जैसा हमने विलाप के साथ देखा है। भजन 62, श्लोक 12, ईश्वर का अमोघ प्रेम।

और हे प्रभु, तू प्रेममय है। निश्चय तू हर एक को उसके कामों के अनुसार प्रतिफल देगा। और इसलिए, इससे समता और निष्पक्षता की धारणा सामने आती है।

दुष्टों और शत्रुओं के विरुद्ध निर्णय होने वाला है, लेकिन वहां निष्पक्षता होती है। भजन 63 श्लोक नौ और 10, जो मेरे प्राण के खोजी हैं वे नष्ट हो जाएंगे। वे पृथ्वी की गहराइयों तक चले जायेंगे।

वे तलवार के वश में कर दिये जायेंगे और गीदड़ों का भोजन बन जायेंगे। 63, श्लोक 9, और 10 में एक बहुत ही सशक्त कथन है। 64 तक नीचे जाएँ और मुझे इसे ऊपर लाने दें।

64 परन्तु परमेश्वर उन्हें तीरों से मार डालेगा। अचानक उन पर प्रहार किया जाएगा। वह उनकी जीभ उनके विरुद्ध फेर देगा और उन्हें नष्ट कर देगा।

जो कोई उन्हें देखेगा, वह घृणा से अपना सिर हिलाएगा। अब 68 यहाँ एक और अनुबोधक स्तोत्र बन गया है। और मैं बस इसे उठाना चाहता हूँ और हम फिर से प्रशंसा की ओर अग्रसर होते हुए देखेंगे।

हम अशुद्धि के बीच संबंध देखेंगे। हम बस उन अंतिम कुछ में दिखा रहे हैं कि वे बाहर थे, उपदेशात्मक भजनों के बाहर भी उपदेश थे। इसलिए, मैं सुझाव दे रहा हूँ कि उपदेश की धारणा संपूर्ण भजनों में है, न कि केवल उपदेशात्मक भजनों में।

लेकिन 68 एक उपदेशात्मक स्तोत्र है। तो, यहाँ यह कहा गया है, जैसे धुआँ हवा से उड़ जाता है, क्या आप उन्हें उड़ा सकते हैं। जैसे मोम आग के सामने पिघल जाता है, वैसे ही दुष्ट लोग परमेश्वर के सामने नाश हो जाएँ।

परन्तु धर्मी परमेश्वर के साम्हने आनन्दित और आनन्दित हों। वे खुश और आनंदित रहें। परमेश्वर के लिये गाओ, उसके नाम का भजन गाओ, उसका गुणगान करो जो बादलों पर सवार है।

उसका नाम यहोवा है और उसके साम्हने आनन्द करो। तो, आपको दुष्टों का विनाश मिल गया है और फिर तुरंत उसकी स्तुति करो जो बादलों पर सवार है। आप जानते हैं, स्तुति के लिए एक सुंदर निंदात्मक कदम जिसे हमने विलाप के समान देखा है।

अभी हमारा काम पूरा नहीं हुआ है, हम लगभग इसके अंत के करीब पहुंच रहे हैं। 64, 7 से 9 तक, हमें बदलाव की प्रशंसा करने के लिए वही फटकार मिलती है। यह कहता है, परन्तु परमेश्वर उन्हें तीरों से मार डालेगा।

अचानक उन पर प्रहार किया जाएगा। वह उन्हीं की जीभ उनके विरुद्ध कर देगा, और उन्हें नाश कर देगा। जो कोई उन्हें देखेगा, वह घृणा से अपना सिर हिलाएगा।

अब इसे जांचें। सारी मानव जाति डर जाएगी। वे परमेश्वर के कार्यों का प्रचार करेंगे और उस पर विचार करेंगे कि उसने क्या किया है।

जब वे दुष्टों का विनाश देखते हैं, तब धर्मी लोग परमेश्वर के कार्यों का प्रचार करते हैं और उस पर विचार करते हैं कि उसने क्या किया है। 69, उपदेशात्मक स्तोत्र। फिर से, भजन 69 पर वापस जाएं, उन पर अपराध पर अपराध का आरोप लगाएं, एक तरह का न्यायिक संदर्भ।

उन्हें अपने उद्धार में भागीदार न बनने दें। बहुत जोरदार बयान। उन्हें जीवन की पुस्तक से मिटा दिया जाए।

बहुत जोरदार बयान। तुम जीवन की पुस्तक, उत्पत्ति और प्रकाशितवाक्य, अर्थात् जीवन की पुस्तक को स्मरण करते हो, और धर्मियों के साथ सूचीबद्ध न होओ। मैं दर्द और परेशानी में हूँ।

तेरा उद्धारकर्ता परमेश्वर मेरी रक्षा करे। और फिर क्या प्रतिक्रिया है? मैं गीत गाकर परमेश्वर के नाम की स्तुति करूंगा, और धन्यवाद देकर उसकी महिमा करूंगा। और इसलिए, आपको फिर से यह दोषारोपण मिलता है और फिर इसके तुरंत बाद भगवान के नाम पर स्तुति का यह कथन आता है।

अब अंत तक काम करते हुए, हम लगभग पुस्तक दो, अध्याय 70, अनुदेशात्मक स्तोत्र के अंत तक पहुँच चुके हैं। 70 भी एक उपदेशात्मक स्तोत्र है। 69 और 70, 58 और 59, पुस्तक दो में चार उपदेशात्मक भजन।

जो मेरे प्राण के खोजी हैं वे लज्जित और भ्रमित हों। जो मेरे विनाश की इच्छा रखते हैं वे सब अपमानित होकर लौटें। जो मुझ से आहा, आहा कहते हैं, वे लज्जा के मारे फिरे।

परन्तु जो लोग तुम्हें ढूँढ़ते हैं, वे सब उन परमेश्वर के विरुद्ध जाएं, जो कह रहे हैं और मुझे लज्जित करने का प्रयत्न कर रहे हैं। परन्तु जितने तुझे ढूँढ़ते हैं वे सब आनन्द करें और मगन हों। जो लोग तेरे उद्धार से प्रेम करते हैं, वे सदैव कहते रहें, परमेश्वर की महिमा हो।

भगवान को महान होने दो. फिर, प्रशंसात्मक बयानों के तुरंत बाद अनुचित बयान दिए गए। अब भजन 71 कोई उपदेशात्मक भजन नहीं है, लेकिन फिर भी इसमें क्या कहा गया है।

भजन 71, श्लोक 10 से 15 और फिर 23 से 24। क्योंकि मेरे शत्रु मेरे विरुद्ध बोलते हैं। जो लोग मुझे मार डालने की बाट जोहते हैं, वे सब मिलकर षड्यन्त्र रचते हैं।

वे कहते हैं, बोली, भगवान ने उसे त्याग दिया है। क्या आपको प्रारंभिक अध्याय याद है? यह अध्याय 71 है, बस किताब खत्म होने वाली है। याद रखें कि पुस्तक 42 और 43 में कैसे खुली थी।

तुम्हारे भगवन कहा है? यहां हम अध्याय 71 में हैं और वे कह रहे हैं, क्योंकि परमेश्वर ने उसे त्याग दिया है। उसका पीछा करो और उसे पकड़ लो, क्योंकि कोई उसे बचा न सकेगा। हे भगवान, मुझसे दूर मत रहो।

हे मेरे परमेश्वर, मेरी सहायता करने के लिये शीघ्र आ। मुझ पर दोष लगाने वाले लज्जा के मारे नष्ट हो जाएं। जो लोग मुझे हानि पहुँचाना चाहते हैं, वे तिरस्कार और अपमान से ढँक जाएँ।

लेकिन जहाँ तक मेरी बात है, मुझे हमेशा आशा रहेगी। मैं तुम्हारी और भी अधिक प्रशंसा करूँगा। पुनः, शत्रुओं पर आक्रमण करो, तिरस्कार करो, तिरस्कार करो।

दूसरी ओर, मैं ईश्वर आपकी अधिक से अधिक स्तुति करूँगा। मैं दिन भर तेरे धर्म का, और तेरे किए हुए उद्धार का वर्णन करता रहूँगा; यद्यपि मैं उसका माप नहीं जानता। जब मैं मैं, जिसे तू ने छुड़ा लिया है, तेरी स्तुति गाऊँगा, तो मेरे होंठ आनन्द से जयजयकार करेंगे।

मेरी जीभ दिन भर तेरे धर्म के कामों का वर्णन करती रहेगी। क्योंकि जो मुझे हानि पहुँचाना चाहते थे, वे लज्जित और भ्रमित हो गए हैं। और वह वास्तव में कह रहा है कि निंदा प्रशंसा का हिस्सा है।

वह अब प्रार्थना में भगवान की स्तुति कर रहा है। यहाँ, मुझे उसे फिर से पढ़ने दीजिए। क्योंकि जो मुझे हानि पहुँचाना चाहते थे, वे लज्जित और भ्रमित हो गए हैं।

यह परमेश्वर के प्रति उनकी स्तुति का हिस्सा है। भजन 71, भविष्य में प्रशंसा करने की उनकी प्रतिज्ञा। भजन 71, यही वह है जिसे हमने अभी कवर किया है।

अब हमने पुस्तक दो में दो भजनों के बारे में बात नहीं की है और मैं उनके बारे में ज्यादा देर तक बात नहीं करना चाहता क्योंकि यह बहुत लंबा चल रहा है। लेकिन अध्याय 45 मानव राजा और

मानव राजा की शादी के बारे में था जब वह अपनी दुल्हन से शादी करता है। सुंदर भजन 45, राजा की अपनी दुल्हन के साथ शादी।

भजन 72, भजन 71 से जुड़ा है। भजन 71, भजनकार कहता है, हे मनुष्य, भगवान मेरी सहायता करो। मैं बहुत बूढ़ा हूँ और जब मैं बूढ़ा और कमजोर हो जाऊँ तो मुझे मत छोड़ो।

और फिर भजन 72 सुलैमान है, युवा जीवन्त राजा सत्ता संभालता है। तो भजन 71, कमज़ोर राजा खत्म हो रहा है, और भजन 72, मजबूत राजा उभर रहा है, सुलैमान। यह लगभग 1 किंग्स 1 जैसा है जिसमें डेविड घटनास्थल से चला गया और बथशेबा और नाथन उसके पास आए और सोलोमन ने दो और तीन, 1 किंग्स अध्याय दो और तीन में कार्यभार संभाला।

और फिर 1 राजा के अध्याय तीन में सुलैमान को परमेश्वर द्वारा बुद्धि प्रदान की जाती है। तो, भजन 72 सुलैमान की चीज़ है। और मानव राजा की एक आवश्यकता पर ध्यान दें।

अब हम दिव्य राजा, दुष्टों का न्याय करने वाले परमेश्वर के बारे में बात नहीं कर रहे हैं। हम मानव राजा के बारे में बात कर रहे हैं। भजन 72 श्लोक चार में, यह कहा गया है, वह, मानव राजा लोगों के बीच पीड़ितों की रक्षा करेगा और जरूरतमंदों के बच्चों को बचाएगा।

वह अत्याचारी को कुचल डालेगा। एक मानव राजा के कार्यों में से एक क्या है? अत्याचारी को कुचलने के लिए. वह अपमान है.

यह एक प्रकार की शापित घटना है जो वहां घटित हो रही है। अब मैं यह सुझाव देना चाहता हूँ कि मैंने उपदेशात्मक स्तोत्रों के बाहर, ऐसे उपदेशात्मक कथन दिखाए हैं जो प्रशंसा में बदल गए या जो प्रशंसा में बदल गए। हमने निंदा और फिर प्रशंसा, निंदा और प्रशंसा दिखाई है।

हमने चार अनुदेशात्मक भजन 58, 59, 69, और 70 को भी देखा है और दिखाया है कि उनमें भी वही चाल है। दुष्टों के विरुद्ध दंड, दुष्टों का विनाश धर्म की प्रशंसा का कारण बनता है। अब, ज़ेंगर ने अपनी पुस्तक, ए गॉड ऑफ़ वेंजेंस में, यह कथन दिया है और मैं इसे इस छोटे पैराग्राफ में पढ़ने जा रहा हूँ।

मुझे लगता है कि उसने वास्तव में इसमें महारत हासिल कर ली है। उनका कहना है कि शत्रुता के भजन हमें न तो ईश्वर का कोई हठधर्मी सिद्धांत और न ही बाइबिल की नैतिकता का सारांश प्रदान करते हैं। और अशुद्धि पर इस चर्चा का अधिकांश फोकस इसी पर रहा है।

वह कहते हैं, नहीं, ये काव्यात्मक प्रार्थनाएँ हैं जो हिंसा करने वालों को आईना दिखाती हैं। वे ऐसी प्रार्थनाएँ हैं जो हिंसा के शिकार लोगों के होठों पर न्याय और प्रतिशोध के ईश्वर के लिए पुकार लगाकर उनकी मानवीय गरिमा को बनाए रखने और ईश्वर के प्रति प्रतिकूल हिंसा के खिलाफ प्रार्थनापूर्ण विरोध में अहिंसक रूप से सहन करने में मदद कर सकती हैं। अपने शत्रुओं और शत्रुता की छवियों के सामने उनका भय। स्तोत्र में जिस प्रतिशोध का संकेत दिया गया है, उसका अर्थ है स्वयं का प्रतिशोध त्यागना।

मैं उन लोगों से, उन शत्रुओं से प्रतिशोध नहीं लेता जो मेरे पीछे आ रहे हैं। मैं उनके पीछे नहीं जाता। मैं प्रार्थना में इसे ईश्वर को समर्पित करता हूँ।

मैं निंदा का गीत गाता हूँ और भगवान इसे विभिन्न कारणों से गाते हैं, शैक्षणिक कारणों से, शिक्षण कारणों से, न्याय के कारणों से, प्रतिशोध के कारणों से और कई कारणों से। और मैं ऐसा करता हूँ और इसलिए हिंसा का शिकार व्यक्ति दूसरे से प्रतिशोध लेने से मुक्त हो जाता है। वह उस प्रतिशोध को ईश्वर को सौंपता है।

वह वह न्याय करता है। और इसलिए मूल रूप से उपदेशात्मक भजन न्याय के लिए पुकार हैं, उन लोगों के लिए न्याय की पुकार हैं जो उत्पीड़ित हैं, राजा को उस जरूरतमंद स्थिति में उनकी मदद करने के लिए बुलाते हैं। और इसके कारण वे क्या करते हैं? जिन असहाय लोगों पर अत्याचार किया जाता है वे फिर परमेश्वर की स्तुति करते हैं।

और इसलिए वह यही है। अब शत्रु भजनहार को हानि पहुँचाता है। भजनकार उद्धार के लिए ईश्वर को पुकारता है और राजा उद्धार करता है।

और फिर भजनहार परमेश्वर की स्तुति करता है। अब, संक्षेप में, हम बस इसके माध्यम से काम करते हैं। हमने जो तीन चीजें की हैं, वे अनुष्ठानों पर की हैं और मूल रूप से दिखाया है कि भजन इस अनुष्ठानिक मंदिर, वेदी, जुलूस जैसे संदर्भ में आते हैं।

हमने प्रशंसा के आधार के रूप में विलाप के महत्व पर भी ध्यान दिया है। और मूल रूप से, हमने वहाँ जो किया वह यह था कि प्रशंसा वास्तविकता पर आधारित है। दूसरे शब्दों में, यह सिर्फ खुशी की बात नहीं है, ओह, हम इस तरह की चीजों के लिए भगवान की स्तुति करते हैं।

यह विलाप में निहित है। हमने तब यह भी दिखाया कि निंदा ही प्रशंसा का आधार है। और यहाँ तक कि कुछ निन्दाएँ भी स्वयं प्रशंसा बन जाती हैं।

ईश्वर का उद्धार और हिंसा का विनाश तथा न्याय की स्थापना से ईश्वर की स्तुति, स्तुति की पुकार उत्पन्न होती है। अब, अगली बार, हम अगली बार जो करेंगे वह यह है कि प्रशंसा को स्वयं प्रशंसा करने के व्रत, प्रशंसा करने का आह्वान, प्रशंसा करने का कारण, प्रशंसा का स्थान, प्रशंसा कैसे करें और फिर इसके आधुनिक निहितार्थों के संदर्भ में देखें। पूजा करना। इसलिए अगली बार हम केवल प्रशंसा के उस पहलू पर ध्यान केंद्रित करेंगे और उसे सामने लाएंगे जैसा कि हमने आज शोक और निहितार्थ के रूप में किया।

हमारे साथ रहने के लिए धन्यवाद। मुझे उम्मीद है कि यह मददगार रहा होगा। और फिर, हम इस दुनिया में उनके वचन और न्याय की आशा के लिए भगवान की स्तुति करते हैं। धन्यवाद।

यह डॉ. टेड हिल्डेब्रांड्ट साल्टर की दूसरी पुस्तक में ईश्वर की स्तुति पर अपने उपदेश में हैं। यह स्तुति के आधार के रूप में विलाप और निन्दा पर सत्र क्रमांक तीन है।